DHYEYA IAS
most trusted since 2003

ध्येयIAS
most trusted since 2003

कुरुक्षेत्र MONTHLY GIST

जून 2022

ग्रामीण पर्यटन

www.DhyeyaIAS.com

DHYEYA IAS
most trusted since 2003

Preface

प्रिय विद्यार्थियों,

सिविल सेवा परीक्षा भारत की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा है ,जिसमें सफल होने पर आपको देश के सर्वोच्च पदों की जिम्मेदारी का निर्वहन करना होता है। इन सर्वोच्च पदों पर बैठे लोग नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसीकारण संघ लोक सेवा आयोग अपनी परीक्षा प्रणाली के माध्यम से ऐसे अभ्यर्थियों का चयन करना चाहता है जो तार्किक, प्रगतिशील, संवेदनशील होने के साथ साथ संपूर्ण वैश्विक जगत में आ रहे परिवर्तनों के प्रति जागरूक हों। संघ लोक सेवा आयोग ने इस जागरूकता का परीक्षण करने के लिए विगत 7 वर्षों में करंट अफेयर्स के प्रश्नों की संख्या को बढ़ा दिया है। करंट अफेयर्स के प्रश्नों की संख्या में बढ़ोत्तरी प्रारंभिक परीक्षा के साथ मुख्य परीक्षा में भी की गई है। प्रारंभिक परीक्षा में हर साल औसतन 13-14 प्रश्न करंट अफेयर्स से पूछे जा रहे हैं। वर्ष 2016 में तो लगभग 40 प्रश्न सिर्फ करंट अफेयर्स से पूछ लिए गए थे।

वर्ष 2013 में मुख्य परीक्षा के पैटर्न में परिवर्तन किया गया जिसके बाद मुख्य परीक्षा में करंट अफेयर्स सबसे निर्णायक सेगमेंट के रूप में हमारे सामने आया है। मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र- 2 और सामान्य अधययन प्रश्न पत्र- 3 के अधिकांश प्रश्नों में आप करंट अफेयर्स के निर्णायक रोल को देख सकते हैं। इन दोनों प्रश्न पत्रों में अच्छा स्कोर करने की प्राथमिक शर्त करंट अफेयर्स पर आपकी अच्छी पकड़ होना बन गया है। सामान्य अधययन प्रष्ठन पत्र 1 और 4 के कुछ ट्रेडिशनल प्रश्नों में भी आप करंट अफेयर्स का रोल को देख सकते हैं। निबंध का पेपर भी हमारे लिए बहुत स्कोरिंग होता है। करंट अफेयर्स के कई मुद्दों को निबंध में डायरेक्ट पूछ लिया जाता है। इस तरह मुख्य परीक्षा में करंट अफेयर्स की निर्णायक भूमिकास्पष्ट हो जाती है। अगर आप हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के रिजल्ट का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तो आपको पता चलेगा कि सामान्य अध्ययन में अंग्रेजी माध्यम के अभ्यर्थियों के नम्बर हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों की तुलना में ज्यादा आते हैं, इसके पीछे एक प्रमुख कारण यह है कि उनका करंट अफेयर्स पर कमांड हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों से बेहतर होता है। इससे साफ हो जाता है कि करंट अफेयर्स न सिर्फ सेलेक्शन के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि रेंक निर्धारण में भी इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मुख्य परीक्षा के बाद अभ्यर्थी को साक्षात्कार (इंटरव्यू) फेस करना होता है। इंटरव्यू में सामान्यत: करंट अफेयर्स के मुद्दों पर प्रश्न पूछे ही जाते हैं। कई विद्यार्थियों का तो 80 तक इंटरव्यू करंट अफेयर्स के परिधि में ही पूरा हो जाता है। निष्कर्ष के रूप यह कहा जा सकता है कि इस समय अगर आपको सिविल सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त करना है तो आप करंट अफेयर्स नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं।

करंट अफेयर्स के इस महत्व को देखते हुए ही हमारा संस्थान समय-समय पर करंट अफेयर्स की क्लास आयोजित करता आया है। हमारी मैगजीन जिसका नाम 'परफेक्ट 7' है वह करंट अफेयर्स के लिए अपने आप में 'गागर में सागर' का काम करती है इसीकारण उसका नाम 'परफेक्ट 7' रखा गया है। ध्येय संस्थान हमेशा से विद्यार्थी हितों के अनुकूल रचनात्मक कदम उठाता आया है, इसी क्रम में ध्येय **IAS** ने 'कुरूक्षेत्र' पत्रिका का 'मंथली जिस्ट' निकालने का निर्णय लिया है। यह एक ऐसी सरकारी पत्रिका है जिससे न सिर्फ सरकारी योजनाओं की स्थिति का पता चलता है बल्कि हमारे चारों ओर जो घटित हो रहा है उसके विषय में शानदार लेख हमें देखने को मिलते हैं। प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के प्रश्नों का एनालिसिस करने से आपको पता चलेगा कि बहुत से प्रश्न इस पत्रिका में कवर किये गये टॉपिक से डायरेक्ट पूछे जाते रहे हैं। इस पत्रिका में लिखे गये लेख न सिर्फ गुणवत्ता की दृष्टि से बहुत अच्छे होतें हैं बल्कि सरकारी आंकड़ो के लिए भी यह प्राथमिक सोर्स के रूप में यूज किये जाते हैं। इस पत्रिका की परीक्षा उपयोगिता को देखते हुए ध्येय **IAS** ने इसका जिस्ट बनाने का निर्णय लिया है। इस जिस्ट से आप न सिर्फ कम समय में पत्रिका में लिखे गए मुद्दों से परिचित हो पाएंगे बल्कि इसमें ध्येय **IAS** टीम के द्वारा जोड़े गए इनपुट्स का भी लाभ उठा पाएंगे। इसके अलावा हम पत्रिका में कवर किये गए मुद्दों का बैकग्राउंड आपको बताने का प्रयास करेंगे जिससे उस टॉपिक पर आपकी पूरी कमांड बन सके। जिस्ट में कवर किये गए टॉपिक से किस प्रकार के प्रश्न पूछे जा चुके हैं, उन्हें भी आपके सामने रखा जाएगा। इससे आपको यह पता चल पायेगा कि संबंधित टॉपिक से किस प्रकार के प्रश्न पूछे जाते रहें हैं। इन प्रश्नों को देखकर आप अनुमान लगा पाएंगे कि किसी टॉपिक को हमें कैसे तैयार करना है। इसके अलावा जिस्ट में कवर किये गए टॉपिक पर हम आपको कुछ मुख्य परीक्षा के प्रश्न और उनके मॉडल आंसर भी देंगे जिससे आप टॉपिक पर अपनी पकड़ को चेक कर सकें। हमने इस जिस्ट को सारगर्भित और रोचक बनाने का अपनी तरफ से प्रयास किया है, जिसमें सुधाार की कई गुंजाइशें हो सकती हैं। आप सबके सुझाव आमंत्रित हैं।

प्रबंधक
ध्येय आईएएस

कुरूक्षेत्र

MONTHLY GIST

जून 2022

विषय सूची

Chapter- 01
अलौकिक सौंदर्य और पूर्वोत्तर भारत..... 01-04

Chapter- 02
पारिस्थितिकी पर्यटन व स्थानीय विकास 04-07

Chapter- 03
भारत में पर्यटन की संभावना 07-09

Chapter- 04
भारत व पर्यटन स्थल 09-11

Chapter- 05
कोविड और पर्यटन उद्योग 11-13

Chapter- 06
योग और स्वास्थ्य 13-15

Chapter- 07
भारतीयता में संस्कृति का योगदान 15-17

Chapter- 08
कृषि पर्यटन में असीम संभावनाएं 17-19

Chapter- 09
ग्रामीण पर्यटन-प्रगति और संभावनाएं 19-22

1. अलौकिक सौंदर्य और पूर्वोत्तर भारत

➤ पूर्वोत्तर भारत भौगालिक रूप से भारत के पूर्वतम राज्यों का एक समूह है, जिसमें असम, अरूणांचल प्रदेश, सिक्किम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैण्ड राज्य आते हैं।

➤ यह 7 राज्य सात-बहनें (सेवन सिस्टर) के रूप में जानी जाती हैं।

➤ इन राज्यों का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2,62,179 वर्ग किमी. है । जहाँ का जनघनत्व 173 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है।

➤ ये राज्य अपने कुल भौगोलिक सीमा का एक बड़ा हिस्सा पड़ोसी देशों के साथ साझा करते हैं। जिनमें उत्तर में 1395 किमी. की सीमा तिब्बत के साथ, पूर्व में 1640 किमी. की सीमा म्यांमार के साथ, 1596 किमी. बांग्लादेश के साथ, 455 किमी. की सीमा भूटान के साथ व 97 किमी. की सीमा नेपाल के साथ है।

➤ 1971 में बना पूर्वोत्तर परिषद, इन राज्यों के विकास संबंधी परियोजना के लिए कार्यरत है।

➤ देश के अन्य पर्वतीय स्थलों की तुलना में भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र अलौकिक, अनजाना व दिव्यता से परिपूर्ण है। पूर्वोत्तर भारत वास्तव में प्रकृति के अद्भूत सौंदर्य का गुणावाद करती हुई प्रतीत होती है।

पर्यटन

➤ एक ही प्रकार की मानवीय गतिविधि है, जिसमें लोग अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय निकालकर, मनोरंजन, विश्राम, मन:-शांति सहित अन्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी विशेष स्थल का भ्रमण करते हैं। यह स्थल ऐतिहासिक, प्राकृतिक, भौगोलिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, जैविक अथवा अन्य किसी कारण से प्रसिद्ध हो सकती है।

➤ पर्यटन जो पहले कुछ क्षेत्रों तक ही सिमित था, अब विस्तृत रूप ले चुका है, जिनमें कई नए क्षेत्र जैसे- खाद्य पर्यटन, पोषणीय पर्यटन आदि शामिल हैं।

क्यों जरूरी है पर्यटन

➤ पर्यटन न केवल मानव-जाति को रोमांचित करती है, बल्कि वर्तमान समय के परिदृश्य में, जब पूरी दुनिया भौतिकवादी होती जा रही है, तब पर्यटन दुनिया को प्रकृति के निकट लाती है और इसकी महत्ता को दर्शाती है। अवसाद जो प्राय: मानव-जीवन का अभिन्न अंग बन जाता है, से निजात दिलाने का सर्वोत्तम उपायों में से एक है- पर्यटन।

➤ विभिन्न तहर के पर्यटन-स्थल, पर्यटकों को अलग-अलग प्रकार की अविस्मरणीय रोमांच देती हैं, जो मानव को उर्जावान बनाये रखने के लिए अहम है।

➤ पर्यटन का लाभ सिर्फ मानव के सामाजिक या व्यक्तिगत स्तर तक ही सीमित नहीं है, वरन् इसका आर्थिक महत्व भी काफी ज्यादा है।

पर्यटन न केवल विश्व- अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा क्षेत्र है, बल्कि भारतीय सेवा-क्षेत्र के अर्थव्यवस्था में भी इसका योगदान काफी अहम है। वर्ष 2019 में यात्रा एवं पर्यटन से भारत की अर्थव्यवस्था में 194.30 अरब यूएसडी की आय हुई, जो भारतीय जीडीपी का 6.8 प्रतिशत था, जो अनुमानत: 2028 में बढ़कर 512 अरब यूएसडी हो जाएगा।

➤ 2019 में भारत, पर्यटन से प्राप्त विदेशी मुद्रा के मामले में 13 वें स्थान पर था जबकि कुल वैश्विक आय में भारत का हिस्सा 2.05% था।

➤ देश के पर्यटन क्षेत्र में निवेश से रोजगार सृजन करने की क्षमता अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कम लागत वाली है। वर्तमान समय में लगभग 4 करोड़ लोग इस क्षेत्र से रोजगार प्राप्त कर रहे हैं, वहीं 2029 तक इनकी संख्या 5.3 करोड़ हो सकती है।

➤ अप्रैल 2020 से जून 2021 के दौरान इस क्षेत्र में भारत को लगभग 16 अरब **USD** का निवेश प्राप्त हुआ ।

पूर्वोत्तर भारत- पर्यटन की असीम संभावनाएं

असम

➤ आबादी के लिहाज से पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा राज्य

➤ पूर्वोत्तर का प्रवेश द्वार- **Gateway of Northeast**

➤ प्राकृतिक सुंदरता, गौरवशाली इतिहास, चाय बगान के लिए प्रसिद्ध

➤ काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में पाये जाने वाले एक सींग वाले गैंडा प्रमुख आकर्षण (**UNESCO** का विश्व धरोहर स्थल)

➤ 'नीलांचल की पहाड़ी' में स्थित 'कामाख्या मंदिर' जो देश के 51 शक्तिपीठों में से है, हजारों पर्यटकों का केंद्र है, इसी परिसर में 'अम्बुवाची मेला' वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

➤ ब्रह्मपुत्र नदी द्वीप 'माजुली' (दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप) वैष्णव व क्षत्रिय संस्कृति का केंद्र है, नौकायान के लिए बेहद अनुकूल वातावरण

➤ गुहावटी चिड़ियाघर, पाबितोरा अभयारण्य, द्वीपोर झील (मीठे पानी की झील) आध्यात्मिक व भक्ति आंदोलन के प्रणेता रहे शंकरदेव से संबंधित कला-क्षेत्र, 'हॉफलोंग' हिल स्टेशन, आदि प्रमुख पर्यटन स्थल हैं।

➤ गोल्डन लंगूर जैसे विशिष्ट जानवरों के लिए प्रसिद्ध मानस राष्ट्रीय उद्यान, जहाँ बाघ, गैंडा व बड़ी संख्या में हाथी अपने प्राकृतिक आवास में देखे जा सकते हैं।

➤ धार्मिक स्थलों में कांयाकांति मंदिर, भुवन महादेव मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, इस्कॉन मंदिर प्रमुख हैं इसके अलावा शहीदों का मकब. रा, मनिहरन सुरंग, डिमसा साम्राज्य के खंडहर प्रमुख पर्यटक स्थल हैं।

➤ बिहु (बोहांग बिहु, कटी बिहु एवं रोंगाली बिहु), ओजापली, बागुरूम्बा और भोर जैसे लोकनृत्य तथा कामरूनी व गोलपरिया जैसे लोकगीत आकर्षण के केंद्र रहे हैं।

➤ गमछा, बांस से बनी टोपी (झापी) बिहु पीठा (मिठाई) तथा लकड़ी के गैंडे एवं अन्य कास्ठ- सामग्री अनोखी है।

अरूणांचल प्रदेश

➤ उगते सूरज की धरती

➤ भारत का पूर्वतम बिंदु

➤ चीन, भूटान, म्यांमार के साथ सीमा

➤ बौद्ध धर्म से संबंधित तवांग मठ तथा तवांग क्षेत्र में मोनपा (स्थानीय लोग) द्वारा निर्मित शिल्प कला, सेला दर्रा, ताक्संग मठ, याक (YAKE), बर्फीले रास्तों पर मोटर बाइक की यात्रा आदि रोमांचित करने वालों अनुभव प्रदान करते हैं।

➤ जीरो वैली, बोमडिला दर्रा, बोमडिला मठ, एनी गोमप्पा मठ, परशुराम कुंड, आदि दर्शनीय स्थल हैं।

➤ कैलाश मानसरोवर से निकलने वाली सियांग नदी अरूणांचल से बहकर असम जाती है, जो ब्रह्मपुत्र बन जाती है।

➤ ट्रेकिंग, एनलिंग, राफ्टिंग व पैराग्लाइडिंग जैसे- रोमांचकारी अनुभव पाने के लिए अरूणांचल प्रदेश के कई क्षेत्र बहुत अनुकूल है।

➤ बुम ला दर्रा के पास से चीनी सैनिकों की चौकी का नजारा, उत्तेजित करने वाली होती है । इसके अलावा वन्य जीव प्रेमियों के लिए दिरांग वैली में स्थित देश का एकमात्र याक अनुसंधान केंद्र आकर्षण का केंद्र है।

➤ इसके अलावा मैलिंग **NP** (राष्ट्रीय पार्क) नामदफा **NP** व नूरानग-इस्मा **(Waterfall)** व पाखुई वन जीव अभयारण्य आदि प्रमुख पर्यटन स्थल हैं।

➤ 1962 के भारत चीन युद्ध के शहीदों के लिए बना तवांग युद्ध स्मारक भी आकर्षण का केंद्र है।

पोंग, वांचो, तानु, खांपती जैसे लोकनृत्य तथा दारी, बैगी, न्योगा लोकगीत व तांगखा लोककला लोगों को आकर्षित करते हैं।

मिजोरम

➤ मिजोरम का अर्थ है - पहाड़ों की धरती है।

➤ पहाड़ियों की संरदरता के कारण इसे हाइलैंडर्स का घर उपनाम से भी जाना जाता है।

➤ अंतर्राष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश व म्यांमार से मिलती है, जिसके कारण खान-पान, वेशभूषा, बोली, संस्कृति पर इन देशों का प्रभाव है।

➤ चपचार कुट 'त्योहार' जिसमें खान-पान, नृत्य-संगीत तथा युद्ध-कला का समिश्रण होता है, आकर्षण का केंद्र

➤ मातृ-स्वामित्व की संस्कृति आकर्षण का केन्द्र

➤ यहाँ प्राकृतिक वातानुकुलित **AC** का अहसास

➤ एंजूयूरियम (मिजोरम का राजकीय पुष्प) फेस्टिवल में शामिल होकर विविध प्रकार के दुर्लभ पुष्पों की झलक लेने के साथ-साथ, पारंपरिक नृत्य, युद्ध कला व हस्तशिल्प का आनंद लिया जा सकता है।

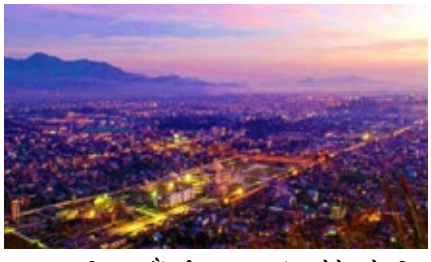

➤ प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए मुईफांग पहाड़ी, तामदिल झील व फांगशुई

जो ट्रेकिंग के लिए भी अनुकूल है, प्रमुख पर्यटक-स्थल है।

- म्यांमार से सटा फांगयुई हिल्स जिसे नीले पहाड़ी के नाम से जाना जाता है, इस राज्य की सबसे ऊँची चोटी है तथा प्राकृतिक सौंदर्य का खजाना है।
- छेलम, खुल्लम, चैलम, सोलाकिया, तलंगलम जैसे लोकनृत्य दामिनी जाई, सेलो जई, छेयी लाम जैसे लोक गीत आकर्षण का केंद्र हैं।
- मिजो शॉल, जो महिलाओं की पारंपरिक परिधान का अहम हिस्सा है, काफी लोकप्रिय है।

मणिपुर

- मणिपुर का शाब्दिक अर्थ रत्नों अथवा मणियों की भूमि है।
- नाम के अनुरूप ही यह धरती नृत्य, नदी, खेल-खिलाड़ी, कला-संस्कृति जैसे मणि से पूर्ण है।
- इम्फाल में कंगला किला, शहीद मीनार, गोविंद जी मंदिर, मणिपुर जुलोजिकल पार्क प्रमुख पर्यटन स्थल हैं।
- उत्तरपूर्व (N-E) की सबसे बड़ी ताजा पानी की लोकटक झील व एकमात्र तैरता राष्ट्रीय पार्क (NP) केबुल लैमजाओ अपने-आप में विशिष्ट स्थान रखता है, जहाँ विभिन्न वन्य जीवों के दर्शन का लुत्फ उठाया जा सकता है।

- हिरणों की दुर्लभ प्रजाति 'संगाई' व क्लाउडेड तेंदुआ तथा दुर्लभ 'सिरोयलिलि' मणिपुर की विशेषता को दर्शाती है।
- रासलीला नृत्य जो राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंग पर आधारित है, अद्वितीय छवि प्रदान करती है साथ ही मणिपुरी नृत्य वैष्णव संप्रदाय के प्रसंगों पर आधारित एक उत्कृष्ट नृत्य शैली है जो पर्यटन की दृष्टि से मनोरम है।
- कहावत है कि पोलो खेल मणिपुर से ही शुरू होकर यूरोप गया।
- डोल, चोलम, थांगटा (मार्शल आर्ट) नूपा आदि अन्य लोकनृत्य व 'लाई हरोबा' लोकगीत काफी लोकप्रिय है।
- मणिपुर का भाला-नृत्य, मणिपुर कुश्तीबाजी, तलवारबाजी में शामिल कलाकारों की कुशलता पर्यटकों को विस्मयवादी अनुभव प्रदान करते हैं।
- यहाँ की जनजातियों की पहनावा, खान-पान व शिल्पकला आकर्षित करती है।

नागालैण्ड

- यहाँ की पहाड़ियाँ ट्रेकिंग, हाइकिंग, कैनिंग जैसी रोमांचकारी अनुभव प्रदान करने में उत्तम हैं।
- कोहिमा एक खूबसूरत हिल स्टेशन है, जहाँ कॉमनवेल्थ वार सिमेट्री (द्वितीय विश्व युद्ध में शहीद हुए थे।) दर्शनीय स्थल है।
- जफकू पीक, जुको घाटी, शीलोई झील, रंगपहाड़ रिजर्व फॉरेस्ट आदि प्राकृतिक पर्यटन स्थल हैं।
- यहाँ का हेरिटेज विलेज एक विशिष्ट अवधारणा है, जहाँ गांव के प्रत्येक घर में अलग-अलग तरह से दरवाजे, गहने, कपड़े, बिस्तर, बर्तन आदि अद्भुत नजारा पेश करते हैं।

- नागालैण्ड की 'दोयांग झील' को पक्षी वैज्ञानिकों द्वारा विश्व में अमूर बाज की राजधानी घोषित की गई है। यहाँ करीब 40 लाख अमूर बाज हजारों मील का सफर तय कर साईबेरिया क्षेत्र से आते हैं।
- हार्नबिल फेस्टिवल, यहाँ की परंपरा की समृद्धि को दर्शाते हैं, जिसका आनंद लेने पर्यटक प्रत्येक वर्ष यहाँ आते हैं।
- रेलमा, चंगी, आलूमट्टू जैसे लोकनृत्य प्रसिद्ध हैं।

त्रिपुरा

- गोवा व सिक्किम के बाद तीसरा छोटा राज्य
- चाय-बांस-रबर के बागान का खूबसूरत नजारा
- सूर्योदय व सूर्यास्त विशेष आकर्षण ऐतिहासिक रूप से महत्वूपर्ण उज्ज्वल पैलेज, इमारत कुंज भवन व शाही निवास स्थल 'नीर. महल' आकर्षण-केंद्र

- ब्रह्म-कुंड का मेला व रूद्रसागर झील
- अगरतला का जगन्नाथ मंदिर, 51 शक्तिपीठों में से एक त्रिपुरी सुंदरी मंदिर, सेपहिजाला चिड़ियाघर, लॉन्गथराई मंदिर प्रमुख पर्यटन केंद्र
- क्लाउडेड लपर्ड राष्ट्रीय पार्क, राजबाड़ी राष्ट्रीय पार्क
- दुर्गा-पूजा, चौदह देवताओं से संबंधित कराची पूजा, गरिया पूजा, बुद्ध पूर्णिमा, डोल जात्रा (होली) अपनी भिन्नता के लिए आकर्षण का केंद्र
- होजगिरी, बीझू, संगराई, बूमनी लोकनृत्य आकर्षण

मेघालय

- शब्दिक अर्थ- बादलों का घर
- ऊँचे झरनों, प्राचीन गुफा, घने जंगल, जनजातीय संस्कृति
- पहाड़ों से घिरे होने व खूबसूरती के लिए शिलांग, पूर्व का स्काटलैण्ड से मशहूर प्रमुख पर्यटन स्थल

- मेघों की अठखेलियाँ देखने के लिए वार्ड झील, उमियम झील व शिलांग चोटी तथा हाथी फॉल्स आकर्षण
- चूना-पत्थर व बलुआ पत्थर की प्रचीन गुफाएं
- पर्वतारोहण, ट्रेकिंग, चट्टान पर चढ़ाई के लिए गारो, खासी हिल्स उपयुक्त
- बेंत, बांस, हथकरघा एवं हस्तशिल्प आकर्षण केंद्र

- ब्रिटिश द्वारा बनाया गया डॉकी पुल (उम्नगोत नदी)
- इसी नदी में मार्च महीने में नौकादौड़ होती है ।

सिक्किम

- मनोरम झील व प्राकृतिक सुंदरता
- गंगटोक जैसे हिल-स्टेशन
- माउंट कंचनजंगा की झलक, त्सोगमा झील, जुलुक, कंचनजंगा राष्ट्रीय पार्क, नाथुला पास, चीन की सीमा के करीब 17000 फीट की ऊँचाई पर गुरूडोंगमार झील दर्शनीय स्थल
- ट्रेकिंग के लिए यूकसोम की पहाड़ी जहां सिक्किम के प्रथम राजा का राजतिलक हुआ था।
- रांका बौद्ध मठ बौद्धों के लिए धार्मिक स्थल

N-E *में पर्यटन को बढ़ावा के लिए उठाये गये कदम*

- **IRCTC** द्वारा लकजरी ट्रेन, विशेष कोच व देखों अपना देश ट्रेन चलाने की योजना

संपर्कता बढ़ाकर पर्यटन को बढ़ावा देने पर योजना

- स्वदेश दर्शन योजना के तहत वित्तीय मदद, थीम-वेस्ड सर्किट के अंतर्गत 10 परियोजनाओं पर काम
- वन्यजीव परिपथ के तहत असम, जनजातीय परिपथ । नागालैण्ड, आध्यात्मिक सर्किट के तहत मणिपुर, इको-पर्यटन के अंतर्गत मिजोरम शामिल
- उड़ान स्कीम के तहत उत्तर पूर्व (**N-E**) राज्यों में संपर्कता में वृद्धि

पर्यटन बढ़ाने के संभावित कदम

- जंगल सफारी की व्यवस्था, अत्याधुनिक जंगल आधारित रेंस्टोरेंट की व्यवस्था
- रोपवे, ग्लास ब्रिज, झीलों, पहाड़ियों की कृत्रिम सजावट
- स्थानीय जनजातीय की उत्कृष्टता का विज्ञापन
- इको-टूरिज्म, हिमालयी-टूरिज्म, स्काईंग, पैराग्लाइडिंग को बढ़ावा

- साथ ही अवसंरचनात्मक विकास, पर्यटन स्थल को चिन्हित करना, रेल, सड़क, हवाई मार्ग की सुलभता, सुरक्षा का ध्यान

2. पारिस्थितिकी पर्यटन व स्थानीय विकास

पारिस्थितिकी तंत्र व विकास

- विकास व पारिस्थितिकी एक दूसरे से संबंध क्षेत्र हैं। ऐसा इसलिए है कि साधारणतया विकास की प्रक्रिया जैसे-जैसे तेज होती जाती है, पारिस्थितिकी पर इसका नकरात्मक असर बढ़ते जाता है। समूची दुनिया में विकास की होड़ में जल-जंगल-जमीन का अति दोहन होता आ रहा है। भौतिकवादी इस संसार में ज्यादा सुख-प्राप्ति की चाह ने जंगल, नदी, पहाड़ आदि प्राकृतिक संपदा को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है।

- पिछले कुछ दशकों से पारिस्थितिकी पर हुए बुरे प्रभाव ने असर दिखाना शुरू किया है, जिसका सबसे ज्यादा प्रभाव मानव-जाति पर ही हुआ है। विकास के नाम पर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो प्रकृति के स्वरूप में बदलाव लाकर किया गया, जिसके कई दुष्प्रभाव सामने आए।

संधारणीय विकास व पर्यटन

- सुसंगत विकास की प्रक्रिया और पारिस्थितिकी तंत्र को संवर्धित करने की प्रक्रिया ही संधारणीय अथवा सतत् विकास को परिभाषित करती है। वास्तव में पारिस्थितिकी पर्यटन पर्यावरण के संतुलन में बिना बदलाव किए आगे बढ़ाया जाता है।

- प्राकृतिक हितों का ख्याल रखकर उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखकर पर्यटन को बढ़ावा देना, पारिस्थितिकी पर्यटन का मूल उद्देश्य है। दुनिया के कई देशों में अब प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखकर पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा रहा है। इससे एक तरफ जहाँ पर्यटन

व पारिस्थितिकी का साथ-साथ विकास संभव हुआ, वहीं स्थानीय समुदाय के लिए रोजगार की अनुकूल स्थिति भी उत्पन्न हुई।

पारिस्थितिकी पर्यटन की आवश्यकता क्यों ? या विकसित पर्यटन से पारिस्थितिकी को नुकसान

- पर्यटन के विकास में जंगलों की सफाई
- वैश्विक स्तर पर पर्यटक को आधुनिक सुविधा देने के प्रयास में प्राकृतिक वातावरण का ह्रास
- वैश्विक स्तर पर तटीय शहरों में मैंग्रोव वनों का नाश

- हिल स्टेशनों पर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए होटलों व अधिक रेंस्तरां का निर्माण
- स्थानीय लोगों के जीवनशैली पर नकरात्मक परिवर्तन
- पर्यटन के अत्यधिक बोझ से प्राकृतिक सुंदरता का नाश, शिमला व लेह जैसे कम आबादी वाले शहरों पर्यटकों की संख्या काफी ज्यादा होती है, ऐसे में संसाधनों का अति दोहन, प्लास्टिक कचरे, शौचालयों के कारण जल का दूषित होना, हिमनदों पर बुरा असर होना, अपरिहार्य हो जाता है।

- समुद्र तटों पर कचरे व अन्य अपशिष्ट पदार्थों के भरमार से मृदा व जल प्रदूषण में वृद्धि

जनजातीय क्षेत्रों में पर्यटन से स्थानीय समुदाय के रहन-सहन में परिवर्तन

- जंगल आधारित पर्यटन से वन्य जीवों के आवास व पर्यटकों द्वारा प्रयोग किए गए वाहनों से वन्य जीवों के क्रिया-कलापों पर नकरात्मक असर
- नदियों, झीलों के प्रदूषण स्तर में वृद्धि
- दक्षिण पूर्व एशिया, जहाँ मैंग्रोव वन ज्यादा पाये जाते हैं, पर्यटन के कारण ऐसे वनों में कमी
- जंगलों में आग लगने की कई घटनाओं में पर्यटकों द्वारा लगाया गया आग, वनाग्नि का एक प्रमुख कारण

पारिस्थितिकी पर्यटन : भारत का प्रयास

- पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देकर, पर्यटन के साथ-साथ स्थानीय समुदाय को लाभ पहुँचाने के लिए प्रयास
- भारत दुनिया के 7 सबसे बड़े जैव विविधता वाले देशों में है, ऐसे में पर्यावरण, मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय व टूर ऑपरेटरों द्वारा इको फ्रेंडली टूरिज्म को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- इको फ्रेंडली का तात्पर्य प्राकृतिक सामाजिक-सांस्कृतिक संसाधनों को समुचित संरक्षण है।
- पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित रखने के लिए कई सारे कानून व समितियों, आयोगों का गठन, वन संरक्षण एक्ट, पर्यावरण संरक्षण एक्ट, वन्य जीव बोर्ड आदि

- अतुल्य भारत के स्लोगन के माध्यम से भारत सरकार द्वारा विभिन्न शहरों, विरासतों एवं देहातों का पर्यटन विकास के लिए विज्ञापन
- पारिस्थितिकी तंत्र पर दबाव डालने के बजाय गाँवों, रूपहली संस्कृति, भारतीय परिधानों, परंपरागत नृत्य, गीत आदि क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा
- कृषि क्षेत्रों में होटलों व रेस्तरां के निर्माण के बजाय होम-स्टे जैसी सुविधा, इससे न केवल स्थानीय निवासियों को घर बैठे आय की प्राप्ति होगी, वहीं होटलों/रेस्तरां जैसे आधुनिक व्यवस्था में खान-पान संबंधी कचरों में कमी।
- पब्लिक निजी भागीदारी (PPP) मॉडल से पर्यटन को बढ़ावा

राज्य स्तरों पर बेहतर प्रयास

- हिमाचल सरकार द्वारा पर्यावरण पर्यटन विकास नीति, जिसमें स्थानीय समुदाय की भागीदारी पर बल
- असम सरकार द्वारा 'अमर आलोही' ग्रामीण 'होम स्टे' योजना का क्रियान्वयन

- आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा पीपीपी मॉडल से पर्यटन उद्योग में निवेश को बढ़ज़वा देकर संधारणीय पर्यटन के उद्देश्य से हाई-एंड-लग्जरी रिट्रीट योजना का विकास
- केरल सरकार द्वारा पर्यटन के विकास के लिए टैगलाईन 'गॉड्स ऑन कंट्री' के माध्यम से पयर्टन को विस्तार, बैकवाटर, जिसे कयाल के नाम से जाना जाता है का विकास, आयुर्वेद व ईकोटूरिज्म पर केन्द्रित है।
- बेकल व वागामोन जैसे शहर को इकोटूरिज्म केंन्द्र बनाने की एकीकृत योजना
- असम सरकार की 'ऑल-सीजन'- 'ट्रेवलर डेस्टिनेशन' योजना, वन्य जीव, जैव-विविधता पर आधारित पर्यटन ।

केरल सरकार की तेन्माला, योजना पूर्णत: इको टूरिज्म पर आधारित

- कर्नाटक, सिक्किम, राजस्थान, गुजरात जैसे राज्यों द्वारा भी इको टूरिज्म व पारिस्थितिकी तंत्र को बिना नुकसान पहुँचाने वाले पर्यटन को बढावा दिया जा रहा है।

वैश्विक प्रयास

- अंतर्राष्ट्रीय फोरम, पृथ्वी सम्मेलनों, जलवायु परिवर्तन के वैश्विक आयोजनों व पर्यावरणविदों द्वारा विश्व स्तर पर पर्यटन व पारिस्थितिकी में

संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया गया।

- इको टूरिज्म शब्द की उत्पत्ति इन्हीं वैश्विक प्रयासों से हुई।

- पर्यावरण सुरक्षित- पृथ्वी सुरक्षित जैसी अवधारणा को समझते हुए यूएन द्वारा सदस्य राष्ट्रों को इकोटूरिज्म पर ध्यान केन्द्रित करने संबंधी आग्रह
- भूटान जैसे छोटे देश के संविधान में पर्यावरण की चिंताएं व संवर्धन के प्रावधान

बांग्लादेश द्वारा पर्यटन व पारिस्थितिकी में समायोजन के लिए कई सारे प्रयास

दक्षिण-एशिया के देशों द्वारा प्लास्टिक कचरे के निस्तारण व प्रबंधन में कुशलता

- संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन द्वारा पर्यटन को आर्थिक-समाजिक व पर्यावरणीय अनुकूल बनाने पर जोर

- मालदीव जैसे देश, जिनका अर्थव्यवस्था का आधार पर्यटन ही है, ने पर्यटन व पारिस्थितिकी के बीच उल्लेखनीय संतुलन बनाया है। समुद्री चट्टानों का संरक्षण, समुद्र तटों का पर्यावरणीय अनुकुल विकास व प्रबंधन, कचरे का प्रबंधन व पुनर्चक्रण की व्यवस्था काबिले तारीफ है। सैलानियों व होटलों के लिए जल संरक्षण, कचरे का निपटान अनिवार्य है।
- इंडोनेशिया जैसे देश भी इस मायने में प्रगति की ओर है, पर्यटन सेवाओं से दुर्लभ प्रजाति की पक्षियों पर होने वाले नकारात्मक असर से बचाव के लिए बर्ड वाच परियोजना चलाई जा रही है ।

- नेपाल ने पर्यावरण पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ, इससे होने वाले लाभ को स्थानीय समुदाय के हितों से जोड़ा है ताकि न केवल समुदाय का विकास हो बल्कि पर्यावरण का संवर्धन भी होता रहे।
- फिलीपिंस देश द्वारा पर्यटकों के ब्लास्ट फिशिंग जैसे गतिविधि पर रोक लगा दी गई है।
- ब्लास्ट फिशिंग, मछली पकड़ने का एक ऐसा तरीका है, जिसमें मछलियों के ज्यादा तादाद वाली संभावित क्षेत्रों में बमों अथवा अन्य विस्फो. टक के सहायता से विस्फोट कर मछली पकड़ा जाता है। इससे समुद्री प्रदूषण, जैविकता का नाश व समुद्री घासों का नाश होता है।

आगे की राह

- स्ट्रैटजिक इन्वेस्टमेंट रिसर्च यूनिट के आंकड़ो से पता होता है कि भारत ने पारिस्थितिकी पर्यटन को अपनाने की दिशा में उल्लेखनीय काम किया है। विश्व भर में पर्यावरण पारिस्थितिकी व पर्यटन में संतुलन के लिए किए जा रहे प्रयास संवेदनशीलता को प्रदर्शित करते हैं।
- आगंतुक पर्यटकों के बजाय स्थानीय पर्यटकों का पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होना परम कर्तव्य है इससे स्थानीय संसाधनों एवं परम्पराओं का सम्मान बढ़ेगा।

- पर्यटन को धार्मिक-ऐतिहासिक स्थल के साथ-साथ वन एवं वन्य जीव आधारित थीम को बढ़ावा देना।
- पर्यटन, पर्यटक व स्थानीय लोगो के जीवन शैली में संतुलन बनाना आवश्यक
- गैर नवीकरणीय संसाधनों से संबंधित ऐसे पर्यटन जिसमें इन संसाधनों का ह्रास होता है, को हतोत्साहित कर, अन्य विकल्प को बढ़ावा देना
- जन जागरूकता के माध्यम से पर्यटन (इको-फ्रेंडली) में स्थानीय लोगों की भागदारी।

- पर्यटकों के लिए गाइड के रूप में स्थानीय लोागों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि पर्यटकों को वे अपने क्षेत्र, स्थलों, रहन-सहन, खान-पान, नृत्य-संगीत, त्योहार आदि के बारें में बताकर दिलचस्पी पैदा करने में सफल हो सकें। ऐसा होने से न केवल गाइड के रूप में उन्हें आय की प्राप्ति होगी बल्कि पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा, साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार के ऐसे विकल्प नहीं तलाशने होंगे, जिससे कि पारिस्थितिकी को कोई नुकसान पहुँचे।
- वास्तव में पर्यटक, चकाचौंध की दुनिया से निजात पाने, मन स्थिति को शांति व एकाग्रचित होने के उद्देश्य से ही पर्यटन करता है, ऐसे में विशिष्ट तरह की प्राकृतिक शांति, सुदरता, स्थानीय लोगों का शांत जीवन उन्हें आकर्षित करता है, इसलिए ज्यादा आधुनिकता के बजाय, पर्यटकों के इच्छानुसार माहौल तैयार किए जाने की प्रवृत्ति विकसित होनी चाहिए।
- गांधी के स्थानीय संसाधनों द्वारा ग्रामीण भारत के निर्माण पर बताये गए उपाए को प्रभावी तरीके से लागू करना होगा।
- विलियम वर्ड्स वर्थ ने जिस प्रकार प्रकृति की ओर लौटने का आह्वान किया था, हमें उसी राह पर चलना होगा।
- पारिस्थितिकी पर्यटन मूलत: प्रकृति को बचाने एवं पर्यटन को बढ़ाने की पहल है, अर्थात् दो-तरफा लाभ देने वाला प्रयास है। वास्तव में यह एक प्रकृति बचाओ आंदोलन है, जिसमें न शोर है, न हंगामा, न प्रदर्शन, बस कुछ अच्छा, प्रकृति-प्रिय करने की जिद है।

- टूर-ऑपरेटर, गैर सरकारी संगठन, निजी संगठन तथा समुदाय-आधारित पर्यावरण पर्यटन संबंधी संगठनों द्वारा इस दिशा में अथक प्रयास किए जाने की जरूरत है।
- प्रकृति कभी उस दिल को धोखा नहीं दे सकती जो उसे प्यार करता हो।

- पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए भारत सरकार पर्यटन योजना राष्ट्रीय पर्यटन विकास नीति 2002 में बनाई गई जिसमें ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया। इसके अलावा इसमें विरासत, धार्मिक व पारिस्थितिकी पर्यटन पर जोर दिया।

अतुल्य भारत अभियान- सितंबर 2002

- जिसके अंतर्गत भारत के शहरी, ग्रामीण, विरासत, धार्मिक ऐतिहासिक स्थालों को पर्यटन के लिए बढ़ावा देना है।

स्वेदश दर्शन योजना- 2014-15 पूर्वोत्तर परिपथ तथा ग्रामीण परिपथ के माध्यम से पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा

- आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम के तहत ग्रामीण पर्यटन, ग्रामीण जीवन ही देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता का केंद्र है, ऐसे में इन्हें पर्यटन से जोड़कर स्थानीय उत्पादों का विकास, रोजगार के नए अवसर आदि उपलब्ध कराना उद्देश्य है।

3. भारत में पर्यटन की संभावना

- भारत एक बहु-सांस्कृतिक वाला देश है, जहाँ खान-पान, पहनावा, कला, ऐतिहासिक, जनजातियाँ संबंधी विविधताएं है, जो पर्यटन के लिए अनुकूल अवसर उपलब्ध कराते हैं। भौगोलिक दृष्टि से हिमायलयी क्षेत्र, पूर्वोत्तर भारत के जंगल असंख्य हिल स्टेशन, पश्चिम में रेगिस्तान, दक्षिण भारत के हरे-हरे पहाड़ियाँ, तटीय क्षेत्र, बायोस्फीयर रिजर्व, राष्ट्रीय उद्यान आदि, पर्यटन की असीम संभावनाएं समेटे हुए है।
- मैक्समूलर ने भारत के बारे में कहा था, ''हमें अगर प्राकृतिक संपदा, भक्ति, सौंदर्य, आध्यात्म से सबसे ज्यादा परिपूर्ण जगह की तलाश अगर पृथ्वी पर करनी हो तो सिर्फ भारत ही इसे पूरा कर सकता है।''

पर्यटन व अर्थव्यवस्था

- पर्यटन का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक स्तर पर योगदान
- उच्च कौशल-प्राप्त व अर्द्धकुशल दोनों तरह के रोजगार सृजन की क्षमता
- 2019 में इस क्षेत्र का कुल रोजगार में योगदान 8.8% कुल निर्यात में 5.8% तथा जीडीपी में 6.9% था,
- वर्तमान में (कोविड के नकारात्मक प्रभाव के कारण) कुल निर्यात में 2.5% का योगदान, सकल घरेलू उत्पाद में 4.7% तथा रोजगार में 7.3 प्रतिशत का योगदान है।
- सेवा क्षेत्र जो अर्थव्यवस्था में 55% का योगदान देता है, में पर्यटन और यात्रा की योगदान काफी महत्वपूर्ण है।

- पर्यटन सिर्फ मानव के सामाजिक या व्यक्तिगत स्तर तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी काफी ज्यादा है।
- पर्यटन न केवल विश्व-अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा क्षेत्र है, बल्कि भारतीय सेवा-क्षेत्र के अर्थव्यवस्था में इसका योगदान भी काफी महत्वपूर्ण है। वर्ष 2019 में यात्रा एवं पर्यटन से भारत की अर्थव्यवस्था में 194.30 अरब **USD** की आय हुई, जो भारतीय जीडीपी का 6.8% था और अनुमानत: 2028 में बढ़कर 512 अरब **USD** हो जाएगा।
- वर्ष 2010 में भारत को पर्यटन क्षेत्र से 14.50 अरब **USD** की विदेशी मुद्रा की प्राप्ति हुई, वहीं 2019 में यह 30 अरब **USD** थी, जो 2028 में बढ़कर 50 अरब **USD** होने की संभावना है।
- 2019 में भारत, पर्यटन से प्राप्त विदेशी मुद्रा के मामले में 13 वें स्थान पर था। जबकि कुल वैश्विक आय में भारत का हिस्सा 2.05% था।
- पर्यटन क्षेत्र में कम निवेश के माध्यम से ज्यादा रोजगार सृजन करने की क्षमता है अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा कम लागत वाली है वर्तमान समय में लगभग 4 करोड़ इस क्षेत्र से रोजगार प्राप्त कर रहे हैं, वहीं 2030 तक इसकी संख्या 5.3 करोड़ हो सकती है।

- अप्रैल 2020 से जून 2021 के दौरान, पर्यटन क्षेत्र में भारत को 16 अरब **USD** प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त हुआ ।

पर्यटन का महत्व

- वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास का प्रमुख स्रोत
- सस्ते रोजगार उपलब्ध कराने की क्षमता
- पर्यटन से सांस्कृतिक महत्ता का आदान-प्रदान संभव है, जिससे स्थानीय कलाएं, खान-पान, पहनावा आदि को विश्व स्तरीय पहचान मिल सकता है।
- लोगों के मनोरंजन, स्वास्थ्य वर्धन का साधन
- ट्रेकिंग, स्कीइंग जैसे साहसी खेलों के द्वारा पेशेवर खिलाड़ी बनने का विकल्प
- पारिस्थितिकी पर्यटन से लोगों का प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि
- राजनैतिक स्तर पर **'Soft Diplomacy'** का साधन
- शैक्षणिक स्तर पर पर्यटन, ज्ञान वर्धक हो सकता है। वस्तुत: शिक्षण संस्थानों द्वारा बच्चों को ऐतिहासिक, प्राकृतिक स्थलों का भ्रमण, ज्ञानवर्द्धन के उद्देश्य से ही कराया जाता है।
- टूर-ऑपरेटर, ट्रेवल एजेंसी, होटल, रेस्तरां जैसी सेवाओं के विकास के साथ- साथ स्थानीय लोगों का समावेशी विकास भी संभव
- पर्यटन का व्यापारिक महत्व पेट्रोलियम, खाद्य-पदार्थ या अन्य उत्पादों के समकक्ष
- पर्यटन के विकास के प्रयास में अवसंरचना जैसे, सड़क, बिजली, रेल आदि का विकास स्वत: हो जाता है।
- ऐतिहासिक स्थल, विरासत स्थल, वन्य जीव सफारी जैसे कई पर्यटक स्थल का संरक्षण भी पर्यटन के विकास से संभव हो जाता है।

पर्यटन विकास उत्प्रेरक

- पर्यटन मंत्रालय द्वारा स्वदेश दर्शन योजना के तहत देश भर में 15 विषयगत सर्किटों (परिपथ) की पहचान कर पर्यटन को वर्गीकृत कर विकास का प्रयास किया जा रहा है।

- इस योजना में धार्मिक (बौद्ध, रामायण), ऐतिहासिक (हेरिटेज), आध्यात्मिक (सूफी, तीर्थंकर) भौगोलिक (हिमालयी, तटीय) परिपथों को शामिल किया गया है ।
- बुनियादी ढाँचे में सुधार के लिए स्वेदश दर्शन के अलावा प्रसाद योजना का क्रियान्वयन
- विभिन्न मंत्रालयों, राज्य व स्थानीय स्तर के सम्मिलित प्रयास से 17% प्रतिष्ठित स्थल के विकास के लिए प्रयास
- विरासत स्थल, स्मारक व अन्य पर्यटन स्थल के विकास, रख-रखाव के लिए 'एक विरासत अपनाएं-अपनी धरोहर, अपनी पहचान' योजना शुरू की गयी है।
- पर्यटकों को लुभाने के लिए 5 लाख मुफ्त वीजा की सुविधा दी गयी है।

- नीति आयोग द्वारा द्वीपीय पर्यटन के विकास के लिए विशेष ध्यान केंद्रित किया जा रहा है इसके अंतर्गत अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के स्मिथ, रॉस, लॉन्ग, एव्स द्वीपों का विकास किया जा रहा है जबकि लक्षद्वीप के मिनिकाय, बांगरम, टिन्नाकारा द्वीपों का विकास किया जा रहा है।
- लक्षद्वीप में पारिस्थितिकी पर्यटन व मछली पालन की अपार संभावनाएँ है, ऐसे में इसका संपूर्ण दोहन कर इको-टूरिज्म व सतत् मछली-पालन को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी, बुनियादी ढाँचे का विकास, कई द्वीपों पर जल महल का विकास, पर्यटन क्षेत्र को विकसित करेगा।
- समुद्री शैवाल की खेती व मत्स्य-पालन और फिश-केचिंग प्रक्रिया को भी उत्सुकता का विषय बनाकर, पर्यटन के लिए उत्प्रेरित किया जा सकता है।

ग्रामीण पर्यटन पर विशेष फोकस

- पर्यटन के समग्र विकास के लिए भारत सरकार द्वारा 'अतुल्य भारत योजना' के अंतर्गत व्यापार, स्वास्थ्य, ग्रामीण, पारिस्थितिकी अर्थात सभी तरह के पर्यटन क्षेत्र के विकास पर बल दिया जा रहा है।

- विदेशी पर्यटकों को लुभाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों की कला, पहनावा, खान-पान, बोली काफी अहम है।
- स्वदेशी, शहरी- भारतीय भी ग्रामीण पारंपरिक रीति-रिवाजों से काफी प्रभावित होते हैं।
- पर्यटन मंत्रालय द्वारा ग्रामीण पर्यटन को पर्यटन के अव्वल दर्जों में शामिल किया है।
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाने के लिए तथा स्थानीय उत्पादों के विकास के लिए 'राष्ट्रीय कार्य नीति -मसौदा' तैयार किया गया है।
- 'स्वदेश दर्शन योजना' के तहत ग्रामीण सर्किट, जनजातीय सर्किट व गांधी सर्किट द्वारा ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- पर्यटन मंत्रालय द्वारा तैयार राष्ट्रीय कार्यनीति मसौदा व रोडमैप के स्तंभ:-
- ग्रामीण पर्यटन के लिए आदर्श नीतियाँ व सर्वोत्तम कार्य प्रणाली
- ग्रामीण पर्यटन के विपणन (मार्केटिंग) के लिए वित्तीय सहायता
- डिजीटल प्रौद्योगिकी व सूचना प्लेटफॉर्म का व्यापक इस्तेमाल
- शासन व संस्थागत ढाँचा में सुधार
- ग्रामीण विकास के लिए समग्र नीति

Gram Vikas

ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए संभावित कदम :-

- परिवहन कनेक्टिविटी (सड़क, रेल, हवाई) का विकास
- स्थानीय स्तर पर गाइड, टैक्सी, होटल-रेस्टरां की आधुनिक सुविधा की उपलब्धता

- डिजीटल प्लेटफॉर्म पर पर्यटन-स्थल संबंधी समग्र जानकारी की उपलब्धता
- विशेष परिस्थिति के लिए आपातकालीन सुविधाओं की उपलब्धता
- पर्यटकों की सुरक्षा, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान
- कम पहचान वाले पर्यटक-स्थलों का चुनाव तथा उनका विकास

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाने के साथ ही कुछ बिंदुओं पर आवश्यक रूप से ध्यान दिए जाने की जरूरत है:-

- रोजगार के नए अवसर को सृजित करना
- संस्कृति व त्योहारों की ब्रांडिंग
- कृषि, मत्स्य पालन संबंधी पर्यटन को बढ़ावा
- प्रकृति व पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा
- स्थानीय उत्पादों का मानकीकरण कर व्यापार योग्य बनाना

- कुछ विशेष अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय भाषाओं की जानकारी को स्थानीय लोगों के लिए उपलब्ध कराना
- ग्रामीण संस्कृति व सभ्यता का सतत् दोहन
- ग्रामीण पर्यटन का विकास न केवल देश की अर्थव्यवस्था में सकरात्मक योगदान देगा, बल्कि स्थानीय क्षेत्रों की गरीबी कम करेगा, रोजगार बढ़ाएगा, महिला सशक्तीकरण करेगा, विदेशी अथवा अन्य संस्कृतियों से ग्रामीण लोगों की परिचय कराएगा, साथ ही पर्यटन क्षेत्र को स्थायित्व प्रदान करेगा, क्योंकि अन्य क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण परिवेश में बदलाव अति-न्यून गति से होता है।

आगे की राह

- विविध संस्कृति और समृद्ध स्थापत्य विरासत, ऐतिहासिक धरोहर के बावजूद भारत के पास स्पेन (5.7%), यूएसए (5.4%), चीन (4.5%), यूके (2.7%) और थाइलैंड (2.7%) की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन बाजार का सिर्फ 1.2% हिस्सा है।
- यूके और यूएसए जैसे देश जहाँ विश्व धरोहर स्थलों की संख्या क्रमशः 34 और 24 है, लेकिन पर्यटन से प्राप्त आय, भारत के तुलना में काफी ज्यादा है हालांकि भारत में विश्व धरोहर स्थलों की संख्या 40 है।

- इस परिप्रेक्ष्य में भारत को आरोग्य पर्यटन, कृषि पर्यटन, साहसिक पर्यटन के अलावा ग्रामीण व इको-टूरिज्म के विकास के लिए विज्ञापन, ब्रांडिंग के साथ ही अवसंरचनात्मक विकास, प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रयोग पर बल देकर पर्यटन क्षमता का संपूर्ण दोहन करना होगा।
- इंटरनेट, क्लाउड कंप्यूटिंग, सोशल मीडिया व अन्य डिजीटल प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर भौगोलिक अथवा वित्तीय व अन्य समस्याओं का समाधान कर पर्यटन को बढ़ावा देने संबंधी प्रयास लगातार जारी रखना होगा।

- पर्यटन को अन्य क्षेत्रों जैसे व्यापार, शिक्षा आदि के साथ सहभागिता कर एक-दूसरे के विकास में योगदान करना की जरूरत है।
- वास्तव में भारत जैसे विविध तरह के पर्यटन की अपार संभावना वाला देश को पर्यटन सेवा को अन्य तरह के प्रमुख सेवा-क्षेत्रों के समकक्ष सुविधाएँ प्रदान करने की आवश्यकता है, जिससे भारत भविष्य में दुनिया में पर्यटकों के मामले में अग्रणी देश बन सके जिससे भारत के सर्वांगीण व समावेशी विकास को त्वरित गति प्राप्त हो सके।

4. भारत व पर्यटन स्थल

भारत- पर्यटन का स्वर्ग

- प्राचीन विरासत, संस्कृति विविधता, विशाल जैव-विविधता वाला देश
- हिमालयी -बर्फीले पहाड़ी, तराई के जंगल, हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी, अरब सागर की तटीय खूबसूरती, थार रेगिस्तान की विशिष्ट जलवायिक परिस्थिति, दक्षिण भारत के पश्चिमी-पूर्वी घाट के सदाबहार जंगल, पूर्वोत्तर भारत के खुबसूरत वादियाँ, जनजातियाँ, हिल स्टेशन जैसे पर्यटन स्थलों की असंख्य मात्रा
- अनूठी भौगोलिक, जलवायविक स्थिति, भीड़-भाड़ वाले बाजार से लेकर शांत प्राकृतिक स्थल, रोमांचक व साहसी पर्यटन के अनेकों विकल्प, आयुर्वेद और योग जैसे कई साधन पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है।
- लेह की बर्फीली चट्टान से लेकर रेगिस्तान के टीले, तटीय क्षेत्रों से लेकर द्वीपीय पर्यटन-स्थल, भारत की पर्यटन विशिष्टता को दर्शाते हैं।
- ऐतिहासिक धरोहर, आध्यात्मिक, धार्मिक स्थलों की भरमार

- गांवों का अलौकिक सौंदर्य, परंपरागत जीवन शैली, लोक-लुभावन गीत-संगीत-कला, भारतीय ग्रामीण पर्यटन की विशेष विशिष्टता
- केरल के बैकवाटर में नौकादौड़, वाराणसी में गंगा-आरती, अंडमान-निकोबार द्वीप में तैराकों के लिए गोता लगाने जैसी साहसिक पर्यटन की सुविधा, वन्य जीव अभ्यारण्य, जंगल सफारी में जानवरों को प्राकृतिक आवास में देखने की सुविधा जैसे विकल्प भारतीय पर्यटन को पर्यटकों के लिए विशिष्ट बनाते हैं।

पर्यटन को विकसित करने में सरकारी प्रयास

- मंत्रालय की वेबसाइट और विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म के सहयोग से पर्यटन स्थल का विज्ञापन

- थीम- आधारित पर्यटक सर्किट के एकीकृत विकास के लिए 2014-15 में स्वदेश दर्शन योजना
- स्वच्छ भारत अभियान, स्किल इंडिया, मेक इन इंडिया जैसी योजना से तालमेल के साथ पर्यटन का विकास
- स्वदेश दर्शन के तहत 15 सर्किटों से संबंधित लगभग 76 परियोजना का कार्य पूरा
- परिपथ के अंतर्गत ग्रामीण सर्किट पूर्वोत्तर भारत सर्किट हिमालयी सर्किट, धार्मिक, हेरिटेज सर्किट को शामिल कर इसके वित्तीय पोषण के लिए 4000 करोड़ की सहायता
- 'प्रसाद, देखो अपना देश, श्यामा प्रसाद मुखर्जी रूर्बन मिशन जैसी योजना' से पर्यटन को बढ़ावा

ग्रामीण पर्यटन

- पर्यटन का वह रूप जो ग्रामीण स्थलों पर ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति, जीवन-शैली, खान-पान, पहनावा, स्थानीय विरासत के भ्रमण से संबंधित हो, ग्रामीण पर्यटन कहलाता है।
- ग्रामीण पर्यटन स्थानीय समुदाय का शैक्षणिक आर्थिक व सामाजिक, बौद्धिक विकास में मदद करता है।
- ग्रामीण पर्यटन, पर्यटकों को ग्रामीण परंपरा, संस्कृति का अध्ययन करने का मौका देता है, साथ ही शांति का अनुभव प्रदान करता है।
- ग्रामीण पर्यटन में पर्यटकों के पास कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन कई विकल्प होते हैं।
- भारत के 6.5 लाख+ गांवों में प्रत्येक के पास अनूठी व दर्शनीय विशिष्टता

- 'गांवो का देश' के रूप में जाना जाने वाला भारत के लिए ग्रामीण पर्यटन अत्यधिक महत्वपूर्ण

ग्रामीण पर्यटन व सरकारी प्रयास

- ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय रणनीति मसौदा व रोडमैप जारी किया गया जिसके अंतर्गत पर्यटन स्थलों का मूल्यांकन व रैंकिंग, डिजिटल प्रौद्योगिकी का व्यापक इस्तेमाल, ग्रामीण पर्यटन समूहों का विकास, वित्तीय सहायता, शासन व संस्थागत ढाँचा का विकास जैसे प्रक्रिया शामिल है।

बिहार में भितिहारवा, चंद्रहिया और तुरकौलिया तथा केरल में मलनाड-मालाबार क्रूज पर्यटन परियोजना का विकास ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'स्वदेश दर्शन' के ग्रामीण सर्किट के तहत किया जा रहा है।

- पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014-15 में 'प्रसाद योजना' के अंतर्गत 'तीर्थयात्रा कायाकल्प व आध्यात्मिक संवर्धन अभियान' के माध्यम से धार्मिक स्थलों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।
- ग्रामीण विकास मंत्रालय के 'श्यामा प्रसाद रूर्बन' योजना 2016 का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों को समूह के रूप में विकसित कर सामाजिक -आर्थिक-भौतिक रूप से टिकाऊ व संतुलित विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना है।
- विकास के 21 घटकों में ग्रामीण पर्यटन को घटक के रूप में शामिल किया गया है।

- राष्ट्रीय पर्यटन दिवस (25 जनवरी) 2022 के अवसर पर यूएन विश्व पर्यटन संगठन द्वारा तेलंगाना के पोचमपल्ली गांव को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव का दर्जा दिया गया सरकारी प्रयास को दर्शाता है।
- 2021 के दौरान भी इस पुरस्कार के लिए मेघालय का कोंगयोंग, छत्तीसगढ़ का चित्रकूट, गुजरात का केवड़ी, नागालैण्ड का खोनोमा नामित हुए थे।

UNWTO
World Tourism Organization

- **UN WTO** द्वारा दिया जाने वाला यह पुरस्कार ग्रामीण परिदृश्य, प्राकृतिक व सांस्कृतिक विविधता, स्थानीय मूल्यों एवं गतिविधियाँ, स्थानीय व्यंजन बोली आदि को संरक्षित रखने में सहायक साबित होगा, साथ ही विश्व स्तर पर ऐसे गांवों की लोकप्रियता भी बढ़ेगी, जिससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि संभव है।

संभावित उपाय (ग्रामीण पर्यटन बढ़ाने को)

- हवाई, रेल, सड़क, कनेक्टिविटी का संपूर्ण विकास
- स्थानीय स्तर पर टैक्सी, गाइड, हेल्प लाईन

डेस्क, आपातकालीन सुविधाएं
- सोशल मीडिया पर पर्यटन स्थल संबंधी विस्तृत जानकारी
- अंतराष्ट्रीय व अन्य देशी भाषाओं की सुविधा
- होटल, रेस्तरां, होमस्टे, जैसी सुविधा

आगे की राह

- भारत की समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, प्राकृतिक विरासत देश में पर्यटन के विकास व रोजगार सृजन के लिए बड़ी क्षमता प्रदान करती है।
- जो विषय सांस्कृतिक, ऐतिहासिक अथवा अन्य मामलों में विशिष्ट हो, उनकी पहचान कर पर्यटन-स्थलों की संख्या में वृद्धि की जा सकती है।

- देश की विभिन्न हिस्सों में पर्यटन विकास की संभावना वाले क्षेत्रों का चयन, विकास, ब्रांडिंग जैसे आवश्यक कदम उठाये जाने की जरूरत है । वर्तमान समय के हिसाब से सूचना प्रौद्योगिकी व अन्य नवीन तकनीकों का व्यापक इस्तेमाल इस क्षेत्र का सर्वांगीण विकास कर सकता है।
- ग्रामीण पर्यटन के विषयों में स्थानीय शिल्प, व्यंजन, लोक-नृत्य-संगीत, कृषि पर्यटन, जैविक खेती, बाग-बगीचे, योग व ध्यान केंद्र, आर्द्रभूमि, जनजातीय क्षेत्र, ग्रामीण खेल आदि को शामिल कर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- ग्रामीण पर्यटन के साथ-साथ, भारतीय पर्यटन स्थलों का समग्र विकास, स्थानीय लोगों के आजीविका, आय, रोजगार में वृद्धि करने के साथ ही बौद्धिक, शैक्षणिक स्तर पर भी सकारात्मक योगदान करता है और अंततः ये भातर के समग्र विकास के स्तंभ साबित हो सकते हैं।

5. कोविड और पर्यटन उद्योग

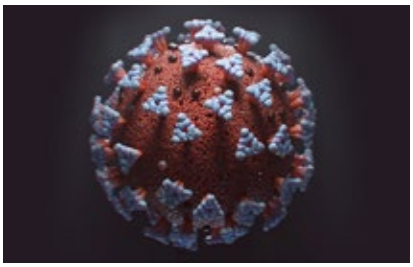

भारत में पर्यटन की संभावना

- भारत एक बहु-सांस्कृतिक वाला देश है, जहाँ खान-पान, पहनावा, कला, ऐतिहासिक, जनजातियाँ संबंधी विविधताएं है, जो पर्यटन के लिए अनुकूल अवसर उपलब्ध कराते हैं। भौगोलिक दृष्टि से हिमायलयी क्षेत्र, पूर्वोत्तर भारत के जंगल असंख्य हिल स्टेशन, पश्चिम में रेगिस्तान, दक्षिण भारत के हरे-हरे पहाड़ियाँ, तटीय क्षेत्र, बायोस्फीयर रिजर्व, राष्ट्रीय उद्यान आदि, पर्यटन की असीम संभावनाएं समेटे हुए है।
- मैक्समूलर ने भारत के बारे में कहा था, ''हमें अगर प्राकृतिक संपदा, भक्ति, सौंदर्य, आध्यात्म से सबसे ज्यादा परिपूर्ण जगह की तलाश अगर पृथ्वी पर करनी हो तो सिर्फ भारत ही इसे पूरा कर सकता है।''

पर्यटन व अर्थव्यवस्था

- यात्रा व पर्यटन क्षेत्र का वैश्विक जीडीपी में बड़ा योगदान
- विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद के अनुसार, वैश्विक जीडीपी में वर्ष 2019 में यात्रा और पर्यटन का 10.3% का योगदान
- वर्ष 2019 में यात्रा एवं पर्यटन का भारतीय जीडीपी में 194 अरब यूएसडी अर्थात 6.8% का योगदान

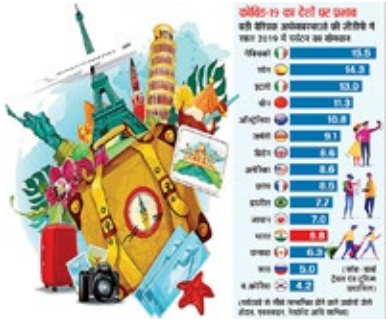

- 2019 में सिर्फ पर्यटन से 15 अरब **USD** की आय
- 2028 तक यात्रा-पर्यटन से भारत को 512 अरब **USD** की आय का अनुमान
- 2019 में भारत पर्यटन से आय के मामले में वैश्विक स्तर पर 13वें स्थान पर था, जबकि वैश्विक आय में भारत का योगदान 2.05% था।
- रोजगार सृजन की अपार क्षमता
- वर्तमान में कुल रोजगार में 8% का योगदान
- वर्तमान समय में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप में 4 करोड़ लोग संलग्न
- अप्रैल 2020 और जून 2021 के दौरान होटल व पर्यटन क्षेत्र को 16 अरब यूएसडी का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

पर्यटन पर कोविड का असर

- संयुक्त राष्ट्र पर्यटन संगठन के अनुसार, कोविड के काल में वैश्विक स्तर पर सैलानियों की संख्या में 70 प्रतिशत की कमी आई
- इसी दौरान भारत में 66% की कमी दर्ज की गई।

- वर्ष 2020 में वैश्विक क्षेत्र में पर्यटन स्थल में 3435 अरब **USD** का नुकसान
- कोविड के दौरान एशियायी पर्यटन सबसे ज्यादा प्रभावित
- भारत को पर्यटन क्षेत्र में इस दौरान 16.7 अरब **USD** का नुकसान

कोविड के बाद पर्यटन क्षेत्र

- पर्यटन क्षेत्र को पुनः व्यवस्थित करने के उद्देश्य से 'रेस्पांड' नजरिया अपनाने का प्रयास
- यात्राओं की बहाली (रिस्ट्रार्ट ट्रैवल), प्रोटोकॉल की स्थापना, मांग में वृद्धि, समन्वय प्रोत्साहन, नए नार्म्स को लागू करना, डिजीटल समाधानों का विकास, ये सभी 'रेस्पांड' प्रक्रिया के तहत निहित हैं।

- शारीरिक दूरी का ध्यान, यात्रा व प्रवेश व पाबंदियों, निजी संरक्षा उपकरण का उपयोग, समग्र चिकित्सा व्यवस्था का सुधार, डिजीटल प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर बल देकर पर्यटन का पुररूद्धार संभव
- स्वदेशी व विदेशी दोनों तरह के पर्यटन पर जोर
- हितधारकों को सहूलियत प्रदान करने के लिए ट्रेवल एजेंट, टूर-ऑपरेटर, पर्यटक परिवहन संचालकों की मान्यता में 6 माह की तात्कालिक वृद्धि
- नीति आयोग के नेतृत्व में सूचना प्रौद्योगिकी का पर्यटन क्षेत्र में व्यापक प्रयोग पर बल

- 'अतुल्य भारत व गुगल' की भागीदारी से वेबसाइट पर ज्यादा संवादात्मक सामग्री का विकास
- भारत के प्रमुख विश्व विरासत स्थलों के लिए 360 डिग्री 'वॉक थ्रू' का निर्माण
- महामारी के बाद **ITC** व ताज जैसे लग्जरी होटलों, में मानवरहित संपर्क, चाबीरहित कमरे, रोबोट सेवा, डिजीटल मेन्यू कार्ड को बढ़ावा
- पर्यटन उद्योग व नागरिक उड्यन मंत्रालय द्वारा 'डिजीटल यात्रा कार्यक्रम' के तहत एयरपोर्ट पर डिजीटल माध्यम से 'चेहरा पहचान प्रौद्योगिकी ' का विकास

- स्मार्टफोन व इंटरनेट की सुगमता से संपर्क रहित भुगतान में आसानी (**QR Code, UPI, Googl Pay, Paytm**)

सरकार की योजनाएं

- पर्यटन उद्योग को मजबूत करने के लिए वित्त मंत्रायल द्वारा 2022-23 के दौरान पर्यटन मंत्रालय को 2400 करोड़ रूपये आवंटित
- स्वदेश दर्शन के तहत 1181 करोड़ का प्रावधान

- पर्यटन अवसंरचना विकास के लिए 1644 करोड़
- धार्मिक, स्वास्थ्य, विरासत, सम्मेलन व प्रदर्शनी आदि को बढ़ावा देने के लिए 'प्रसाद योजना' शुभारंभ
- पर्यटन क्षेत्र के पुनरूद्धार में गति लाने के उद्देश्य से आपातकालीन ऋण गारंटी योजना को मार्च 2023 तक के लिए बढ़ाया गया।
- विदेशी पर्यटकों में वृद्धि करने के उद्देश्य से केंद्रीय पर्यटन राज्यमंत्री द्वारा 5 लाख मुफ्त वीजा दिए जाने की घोषणा

इसके अलावा 170 देशों के यात्रियों को ई-वीजा की सुविधा

- पीएम द्वारा 'वोकल फॉर लोकल' और 'आत्मनिर्भर भारत' द्वारा स्वदेशी पर्यटन व स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा
- पर्यटन मंत्रालय द्वारा 'देखो अपना देश' कार्यक्रम की शुरूआत की गयी, जिसमें भारतीय पर्यटन स्थलों, स्थानीय कलाओं आदि से संबंधित वेबिनार तथा ऑनलाईन संकल्प के माध्यम से जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया है।
- पर्यटन मंत्रालय और भारतीय गुणवत्ता परिषद के सहयोग से, यात्रियों के भरोसे को बढ़ाने के लिए 'साथी' कार्यक्रम की शुरूआत की गई जबकि रेल मंत्रालय द्वारा, पश्चिमी घाटों में पर्यटन बढ़ाने के उद्देश्य से 'कांच लगे छत' वाली ट्रेन की सुविधा उपलब्ध करायी गयी।
- 400 नई वंदे-भारत ट्रेन 25000+ किमी की एक्सप्रेस वे का निर्माण, पर्यटन के लिए परिवहन आसान बनाएगा।

- स्वदेश दर्शन के तहत 15 सर्किटों (परिपथ) के माध्यम से पर्यटन में वृद्धि का प्रयास
- थॉमस कुक व **SOTC TOURS** जैसी कंपनियों द्वारा भारत में पर्यटन सेवा का विस्तार किया जा रहा है।
- सरकार द्वारा ग्रामीण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ग्रामीण पर्यटन 'संर्वधन कार्यक्रम' की शुरूआत
- 'ग्रास रूट्स' नामक संस्था द्वारा ग्रामीणों को गाइड, रसोईया, अच्छा मेजबान बनने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- धान फाउंडेशन- **UNDP**+ भारत सरकार के सम्मिलित प्रयास से तमिलनाडु के करैकुडी और कशुगुमलै में अंत: विकसित पर्यटन परियोजना की शुरूआत

- पर्यटन मंत्रालय द्वारा पर्यटन क्षेत्र के पुनरूद्धार के लिए राष्ट्रीय पर्यटन नीति जारी की गयी जिसके अंतर्गत स्वदेशी व विदेशी पर्यटकों की सुविधा के लिए 12 अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में 24X7 पर्यटक सूचना हेल्पलाइन की व्यवस्था है।

स्वास्थ्य पर्यटन

- कोविड महामारी के बाद 'आयुष' व स्वास्थ्य पर्यटन क्षेत्र में नए संभावनाएं
- महामारी के कारण लोगों में संपूर्ण तंदरूस्ती, प्रतिरोधक क्षमता का विकास बढ़ाने के लिए जागरूकता में वृद्धि
- भारतीय यात्रा स्टार्टअप संस्थाओं द्वारा स्वास्थ्य पर्यटन के विकास पर जोर
- चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'हील-इन इंडिया' अभियान

- स्वास्थ्य यात्राओं में विकास के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा कई दिशा-निर्देश
- ये दिशा-निर्देश गुणवत्ता पूर्ण विज्ञापन सामग्री, सेवा-प्रदाताओं के प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण तथा स्वास्थ्य संबंधी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में तथा कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ाने से संबंधित है।
- स्वास्थ्य पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य केंद्रो को बाजार विकास सहायता उपलब्ध करायी गई है।

आगे की राह

- विश्व के विभिन्न देश, कोरोना महामारी पर नियंत्रण के बाद आवागमन संबंधी छूट प्रदान कर रहे हैं, ऐसे में पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि से संबंधित पर्यटन-स्थलों के असीम संभावनाओं वाला देश भारत, इसका संपूर्ण दोहन करने के लिए स्वयं को तैयार कर रहा है। देश की नीति स्वदेशी-विदेशी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए है, साथ ही भारत के सुरक्षित, समावेशी, संवहनीय पर्यटन उद्योग के अन्य विकसित तकनीक का बेहतर प्रयोग करने की दिशा में प्रयासरत रहना चाहिए।

- पर्यटनमंत्रालयतथा 'रेस्पॉसिबलटूरिज्म सोसाइटी' के बीच किए गए समझौते से संवहनीय व हरित यात्रा परिवहन प्रणालियों को अपनाने की प्रेरणा मिलेगीअ

6. योग और स्वास्थ्य

क्या है योग ?

- योग समस्त जीवन का विज्ञान है, क्योंकि इसका समावेश हमारे जीवन एंव दैनिक जीवन के नित्यचर्या (**Routine**) के रूप में होता है।
- योग शब्द संस्कृति के 'यूज' से बना है जिसका अर्थ जोड़ना होता है। इस जोड़ में आध्यात्मिक शब्दावली में व्यक्ति के चेतना/ज्ञान का आंतरिक समस्त चेतनाओं से मिलन के रूप में परिभाषित किया गया है।
- योग,शारीरिक,प्राणिक,मानसिक,भावनात्मक, आध्यात्मिक सभी पहलुओं को जोड़ने का काम करता है।

योग और भारत

- योग भारत की प्राचीन परंपरा की अमूल्य संपदा है।
- विश्व के प्राचीनतम योग विज्ञान का उद्भव भारत की पवित्र धरती से हुआ है।
- योग का संबंध आद्य-ऐतिहासिक काल से है, संभवत: सर्वप्रथम योग का अभ्यास सैंधव-वासियों द्वारा किया गया ।
- हालांकि पौराणिक कथाओं के अनुसार शिव को 'आदियोगी' इसलिए कहा जाता है कि योग के पहले गुरू शिव ही थे।
- गुरू शिव से शिक्षा प्राप्त करने वाले वर्तमान युग में सप्त-ऋषियों (वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, विश्वामित्र, भारद्वाज, कंव, शैनक) के रूप में जाने जाते हैं।
- महर्षि पतंजलि ने पहली बार योग सूत्रों को व्यवस्थित कर इसका संकलन किया, जिसमें 196 सूत्र शामिल है।

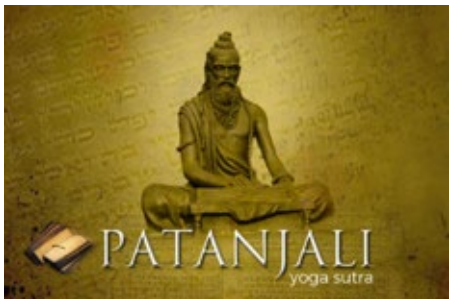

योग व प्रतीक चिह्न

- प्रतीक चिह्न में हाथों का जुड़ाव व्यक्तिगत चेतना का प्रकृति के साथ जुड़ाव को प्रतिबिंबित करता है।
- यह प्रतीक शरीर और मन, मनुष्य व प्रकृति के बीच समरसता को दर्शाता है।

- प्रतीक में चित्रित भूरी पत्तियाँ- भूमि को , हरी पत्तियाँ-प्रकृति को, नीली पत्तियाँ- अग्नि को दर्शाती है। साथ ही सूर्य, ऊर्जा व प्रेरणा का स्रोत है।

योग का मानव स्वास्थ्य पर असर

- योग-विज्ञान का प्रभाव व्यक्ति के बाहरी सौंदर्य के साथ आंतरिक बनावट पर भी होता है।
- योग का लक्ष्य शरीर के विविध क्रिया-कलापों के बीच पूर्ण सामंजस्य स्थापित करना होता है।
- योग ने शरीर के समस्त रोगों को जड़ से खत्म करने में प्रमाणिकता भले ही प्राप्त न की हो, लेकिन यह संभावित रोगों से बचाव जरूर करता है।

- वर्तमान जीवनशैली में सकरात्मक बदलाव लाने के लिए योग सबसे आसान, प्रभावी, सुरक्षित साधनों में से है।
- योग शरीर के मांसपेशियों की ताकत और शरीर के लचीलेपन में वृद्धि करने के साथ-साथ श्वसन व हृदय संबंधी समस्याओं का भी निदान करने में सक्षम है।
- योग, बुरी लत से उबरना, तनाव, चिंता, अवसाद, आदि दीर्घकालीन समस्याओं से भी बाहर निकालता है।
- लंबे समय से चले आ रहे दर्द अथवा नींद की समस्या हो या एकाग्रचित होने मे उत्पन्न हो रही बाधा हो, योग इन सब में सुधारक साबित होता है।
- विभिन्न योगासनों से हड्डी, मांस-मज्जा, अस्थिमज्जा व शरीर के अन्य आंतरिक अंग मजबूत होते हैं।

- मधुमेह, जिसके मरीजों की संख्या दुनियाभर मे काफी बढ़ती जा रही है। विशाल आबादी के इस रोग से पीड़ित होने के कारण भारत को मधु मेह की राजधानी भी कहा जाता है, चूंकि मधुमेह के उपचार में उपयोगी होता है ऐसे में योग भारत के विशाल आबादी के लिए फायदेमंद साबित होगा।
- यह बुरे कोलेस्ट्रॉल को कम करने व अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाने में भी मददगार होता है।
- योग, मोटापा, रक्तचाप, रक्त-संचार संबंधी समस्याओं के निदान में सहायक होता है, साथ ही दिल के अनियमित धड़कन की समस्या का निदान भी योग में निहित है।
- कैंसर व हृदय रोग तथा मानसिक आघात जैसे आधुनिक दौर के बीमारियों के निदान में योग की सामर्थ्य-क्षमता को वैश्विक -स्तर पर स्वीकार्यता मिली है।
- वास्तव में योग मानव- जीवन में बिना किसी नकारात्मक बदलाव किये सिर्फ सकारात्मक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। यह मानव के समग्र-स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद है। यह सिर्फ शारीरिक तौर पर ही मानव को स्वच्छ नहीं बनाता, वरन् भावनात्मक रूप से भी सबल बनाता है। योग एकाग्रता में वृद्धि लाकर सर्वश्रेष्ठ निर्णय लेने की क्षमता का विकास करता है, साथ ही धैर्य में वृद्धि तथा विपरित परिस्थितियों में भी शांतचित्त रहने में मददगार होता है।
- योग अनुकूल स्वास्थ्य की वृद्धि कर मानव जाति को आध्यात्मिक ज्ञान से जोड़ती है, जिससे एक बेहतर समाज और एक उत्कृष्ठ राष्ट्र का निर्माण संभव है।
- भारत के प्रयासों की वजह से संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा योग को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता देने की मंजूरी वर्ष 2014 में प्रदान की गई तथा 21 जून 2015 को विश्व-स्तर पर पहली बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।

- 'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात् धरती पर रहने वाले सभी जीव हमारे स्वजन हैं, का सिद्धांत हमारे देश में सदियों पुराना है। योग के अंतर्राष्ट्रीयकरण ने इसी सिद्धांत को मजबूती प्रदान किया। समस्त विश्व तब से हर साल यह दिवस न केवल पूरी जोश व तन्मयता के साथ मनाता है बल्कि योग के मूल बिंदुओं की अपने जीवन में आत्मसाध्य भी कर रहा है।
- कोविड काल के दौरान, विश्वभर में मची हाहाकार की स्थिति में योग न केवल कोविड से ठीक हुए लोगों में उत्पन्न हुए विकारों को ठीक करने में मददगार साबित हो रहा है, बल्कि तत्कालीन विपरीत परिस्थितियों में पूरे विश्व के लोगों में ऊर्जा व आशा का संचार करने में सफल रहा।
- वास्तव में योग ने विश्व को एकसूत्र में बांध ने का प्रयास किया है, जो भावनात्मक रूप में लोगों को सबल बनाने में सहायक हो रही है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2022

6 वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

- 'योगा फॉर ह्यूमेनिटी' अर्थात् मानवता के लिए योग इस वर्ष की थीम
- 'गार्जियन रिंग प्रोग्राम' की शुरूआत

- इसे प्रोग्राम के अंतर्गत 'मूवमेंट ऑफ सन' अर्थात सूरज की बदलती स्थिति के अनुसार योग-कार्यक्रमों को विभिन्न देशों में संचालित किया जायेगा। अलग-2 देशों में वहां के स्थानीय समयानुसार सूर्योदय के समय योग-कार्यक्रम का संचालन 'इंडियन मिशन' के लोगों द्वारा किया जाएगा।
- इस वर्ष योग दिवस से संबंधित कार्यक्रम कर्नाटक राज्य के मैसूर शहर में किया गया।

योग से अन्य लाभ

- प्रकृति से जुड़ाव के कारण, प्रकृति-प्रेम में वृद्धि, जिससे जलवायु परिवर्तन से निपटने में मददगार

- कार्यशील, कार्यक्षमता में वृद्धि से अर्थव्यवस्था में अप्रत्यक्ष रूप से सहायक
- ज्यादातर आत्म हत्या जैसे मामले में कमी, क्योंकि ज्यादातर ऐसे मामले अवसाद, दीर्घकालीन चिंता, धैर्य की कमी जैसे कारणों से ही होते हैं।
- योग का बढ़ता प्रसार व अहमियत के कारण योग-प्रशिक्षकों की मांग मे योग रोजगार-सृजन में सहायक होगा।
- कई सारे बीमारियों का ईलाज व नियंत्रण में सक्षम होने से योग अप्रत्यक्ष रूप से लोगों के बीच दवाईयों के इस्तेमाल में कमी आयी है।
- योग को बढ़ावा देने से सरकार द्वारा बीमारियों के उन्मूलन संबंधी योजनाओं पर खर्च व विज्ञापन पर खर्च में कमी लायी जा सकती है।
- स्वस्थ-जीवनशैली एवं योग के अनुसरण से स्वास्थ्य क्षेत्र की व्यवस्थाओं पर दबाव में कमी

आयेगी।

- भारतीय दर्शन में योग के अलावा 6 अन्य दर्शन निम्न हैं।
  1. सांख्य दर्शन- कपिल मुनि
  2. न्याय दर्शन- गौतम मुनि
  3. वैशेषिक- कणाद
  4. पूर्व मीमांसा- जैमिनी
  5. उत्तर मीमांसा- बादरायण
  6. वेदांत- शंकराचार्य

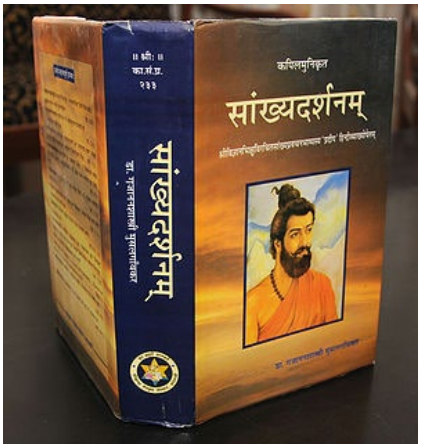

7.भारतीयता में संस्कृति का योगदान

- भारत को विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से माना जाता है। मानवता का विकास ऐतिहासिक रूप में कई चरणों में हुआ है। भारत को हमेशा अपनी समृद्ध व विविधतापूर्ण संस्कृति पर गर्व रहा है। यह सांस्कृतिक संगम प्रवासन के फलस्वरूप समायोजन, सम्मिलन और संक्रमण का परिणाम है।

- भारत की 68.84% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है।
- जनगणना 2011 के अनुसार, 45 करोड़ लोग देश के अंदर ही एक जगह से दूसरे जगह पर जाकर बसे हैं, जो संस्कृति के प्रचारक का काम करता है।
- भारत में आंतरिक प्रवासन करने वालों लोगों की संख्या दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी जनसंख्या वाले देश यूएसए से ज्यादा है।
- संस्कृति व मानवता के विकास में धर्म की महत्ता हमेशा से रही है, जिससे शुरूआती दिनों में पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण स्थलों में धार्मिक स्थल ही शामिल रहे हैं।
- भारत मंदिर, धार्मिक तीर्थ-स्थल, कला व पर्य. टन का केंद्र
- संगीत-नृत्य व अन्य कलाओं के उद्भव में ध र्म का योगदान रहा है।
- धार्मिक तत्वों के साथ आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों के मेल ने पर्यटन को बढ़ावा दिया।

वर्तमान दौर- भारतीय ग्रामीण पर्यटन

- ग्रामीण भारत के पास बाहरी दुनिया के लिए काफी विकल्प मौजूद है। कला, शिल्प, धर्म, परंपरा, और संस्कृति के लिहाज से ग्रामीण पर्यटन की समृद्धि विशिष्ट हैं।

सकारात्मक पक्ष

- ग्रामीण पर्यटन से ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत
- रोजगार व आजीविका के नए संभावनाओं का विकल्प
- ग्रामीण अवसंरचनात्मक विकास संभव
- स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक, शैक्षणिक व बौद्धिक ज्ञान में वृद्धि

- स्थानीय कला-संस्कृति का विश्व के अन्य भागों में प्रसार
- शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के बीच भेदभाव में कमी

कमियाँ

- पर्यटन स्थलों का मानवीकरण नहीं
- संचार, परिवहन, बिजली जैसे मूलभूत सुविधाओं की कमी, निवेश, वित्तीय मदद की कमी
- डिजीटलाइजेशन का अभाव
- सुविधापूर्ण होटल, रेस्तरां की कमी
- आपातकालीन सुविधाओं की कमी
- स्थानीय लोगों को विदेशी अथवा अन्य देशी भाषा के ज्ञान का अभाव
- ग्रामीण-पर्यटन स्थलों के रख-रखाव, संरक्षण का अभाव
- पर्यटन स्थलों से संबंधित जानकारी, समग्र रूप से उपलब्ध नहीं (गूगल, डिजीटल प्लेटफॉर्म पर)
- स्थानीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य-सुविधाएं, स्वच्छता का आभाव
- ग्रामीणों की यह सोच कि पर्यटन-स्थलों की विकास से शहरी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि के कारण ग्रामीण परिवेश का शहरीकरण हो जाएगा, ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए अवरोध है।

राष्ट्रीय पर्यटन नीति और ग्रामीण पर्यटन

- पर्यटन के प्रति दिलचस्पी बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष 1963 में पर्यटन पर तदर्थ समिति का गठन
- पारंपरिक कला व संस्कृति से संबंधित विषयों पर जोर के कारण शिक्षा पर्यटन की अवधारणा पेश की गयी।
- तदर्थ समिति के सिफारिश में तंजौर, दिल्ली, मुम्बई, मांडा, हैदराबाद जैसे शहरों का विकास पर्यटन-स्थल के रूप में किया जाना था।
- पहली पर्यटन नीति की घोषणा नवंबर 1982 में
- आर्थिक विकास व सामाजिक एकता को बढ़ाने के उद्देश्य से संवहनीय पर्यटन पर जोर
- विदेशों में भारत की समृद्ध विरासत का प्रसार इसका अन्य उद्देश्य था।
- पर्यटन को बढ़ाने के लिए वर्ष 1992 में राष्ट्रीय कार्ययोजना का गठन किया गया।
- भारत की सांस्कृतिक विरासत के सभी स्वरूपों के संरक्षण, विकास का ध्यान रखते हुए, पर्यावरण का संवर्धन सुनिश्चित कर, पर्यटन को बढ़ावा देना, इस राष्ट्रीय कार्ययोजना का उद्देश्य था।

- इस योजना के तहत पुराने हवेलियों को पुनर्जीवित कर होटल का स्वरूप प्रदान किया गया, हालांकि उनके मूल-स्वरूप में ज्यादा परिवर्तन नहीं किया गया, जिससे इन हवेलियों की ऐतिहा. सिकता बनी रही।
- इस योजना के तहत सूरजकुंड के शिल्प मेले व उदयपुर के शिल्पग्राम को बेहतरीन सफलता मिली।
- तत्पश्चात सोनपुर मेला, पुष्कर मेला, अल्लुप्पी नौका दौड़ को वित्तीय सहायता प्रदान कर विकसित किया गया, जो ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाने की दिशा में पहला कदम था।

- ग्रामीण पर्यटन को राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 के दौरान मुख्यता से शामिल किया गया।
- इस नीति के अंतर्गत-सूचना, स्वागत, सफाई सुविधा, सुरक्षा, सहयोग एवं संचार जैसे 7 तत्वों पर ध्यान दिया गया।
- सांस्कृतिक पर्यटन के संवर्धन के साथ-साथ ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने पर पूरा जोर दिया गया। शुरूआती दौर में स्वदेशी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उत्तराखंड, लद्दाख, राजस्थान, कच्छ, पूर्वोत्तर राज्यों तथा बागान क्षेत्र को चुना गया।
- थाइलैंड की 'अमेजिंग थाईलैंड', मलेशिया की 'ट्रूली एशिया (Truly Asia) के तर्ज पर अतुल्य भारत की ब्रांडिंग पर जोर दिया गया।
- वर्ष 2008 में अतिथि देवो भव: अभियान चलाया गया जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय लोगों को पर्यटक के प्रति गर्मजोशी से स्वागत की भावना उत्पन्न करने पर जोर दिया गया, साथ ही अपने संस्कृति व विरासत स्थलों के महत्व से अवगत कराया गया।

- वर्ष 2015 में राष्ट्रीय पर्यटन नीति के तहत 'स्वदेश दर्शन योजना' शुरू की गई, जिसमें 15 विषयगत आधारित सर्किटों की पहचान कर विकास पर ध्यान दिया गया। इन सर्किटों में बौद्ध, हिमालयी, तटीय, मरूस्थलीय, गांधी, ग्रामीण, जनजातीय, कृष्णा व रामायण सर्किट शामिल है।
- इस योजना के तहत जनजातीय सर्किट, गांधी सर्किट व ग्रामीण सर्किट के तहत ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया।
- हाल ही में रामायण सर्किट के तहत सीतामढ़ी जिले के पुनौरा धाम को शामिल कर ग्रामीण पर्यटन को मजबूत करने की दिशा में कदम उठाया गया है।
- संस्कृति मंत्रालय द्वारा वर्ष 2017 में सास्कृतिक मानचित्रण के लिए राष्ट्रीय मिशन प्रारंभ किया गया, जो 'हमारी संस्कृति-हमारी पहचान अभियान' के तहत भारतीयों पर्यटन स्थलों का मानचित्रण कर, इसे बढ़ावा देने में योगदान देगा।
- वर्ष 2020 में 'देखो अपना देश' योजना को शुरूआत करने का उद्देश्य, स्वदेशी पर्यटन को बढ़ावा देना है, जो ग्रामीण पर्यटन के विकास में योगदान देगा।

- इस योजना को लोकप्रिय बनाने के लिए 'सबके लिए पर्यटन' का संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से 'पर्यटन पर्व' मनाया गया।

ग्रामीण-क्षेत्रों पर विशेष फोकस

- पर्यटन मंत्रालय द्वारा जून 2021 में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति व रोडमैप तैयार किया है, जिसके अंतर्गत पर्यटन स्थलों का मूल्यांकन व रैंकिंग, डिजीटल प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल, ग्रामीण पर्यटन समूहों का विकास, वित्तीय सहायता, विज्ञापन व ब्रांडिंग तथा शासन व संस्थागत सुधार पर बल दिया गया है।
- इस योजना का क्रियान्वयन 'आत्मनिर्भर भारत' के उद्देश्य को पूरा करने के साधन के रूप में किया जा रहा है।
- 'श्यामा प्रसाद मुखर्जी रूर्बन मिशन' तथा 'प्रसाद' जैसी योजना के मदद से भी ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

ग्रामीण पर्यटन के उत्प्रेरक के रूप में शिक्षा

- राष्ट्रीय पर्यटन नीति के क्रियान्वयन में सफलता के लिए 20 मंत्रालयों व विभागों के बीच सहयोग

- पर्यटन मंत्रालय द्वारा ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण विकास व सांस्कृ. तिक मंत्रालय के बीच सहयोग
- स्कूली व उच्चतर शिक्षा विभागों से भी समन्वय
- नई शिक्षा नीति 2020 में अनुभवात्मक शिक्षण तथा व्यवसायिक प्रशिक्षण का अहम स्थान, जो पर्यटन के विकास में सहयोगी होगा।
- शिक्षा पर्यटन को बढ़ाने के साथ ही ग्रामीण-पर्यटन में भी वृद्धि होगी।

- शिक्षण-प्रशिक्षण से स्थानीय स्तर पर गाइड, एजेंट, आदि की उपलब्धता
- विदेशी अथवा अन्य भाषाओं के ज्ञान में वृद्धि
- शिक्षा-व्यवसायिक न भी हो तो शिक्षण से मिले संस्कार, पर्यटकों को उत्साहित, व आनंदित करने में सफल होंगें, जिससे पर्यटन के विकास योगदान होगा।

आगे की राह

- जनसांख्यिकीय विरासत की विविधता तथा

जीवन शैली और मानवीय मूल्यों की भिन्नता, भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ है। भारत का ज्यादातर हिस्सा ग्रामीण होने से ग्रामीण पर्यटन से काफी आर्थिक-सामाजिक, सांस्कृतिक व बौद्धिक लाभ मिलने की संभावना है।

- ग्रामीण पर्यटन का तेजी से विकास न सिर्फ भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा, बल्कि गांवों की भव्यता, सौम्यता के जादू का अनुभव प्राप्त करने के लिए सैलानियों को विशेष मौका देगा।

- अध्ययन बताते हैं कि पीढ़ियों के बदलते स्वरूप से उनकी दिलचस्पी में स्वत: ही परिवर्तन आया है, जिससे सैलानियों की संख्या में गिरावट आ रही है, विशेषकर ग्रामीण सैलानियों की संख्या में । चूँकि संस्कृति हमें अपने मूल-भावना से जोड़े रखती है, अत: संस्कृति का विकास व स्थायित्व, पर्यटन को बढ़ावा देने में अहम होंगें।

- पर्यटन नीति 2021 के मसौदे में 'विशिष्ट ग्राम जीवन अनुभव पैकेज' से ग्रामीण भारत की विशिष्टताओं का अनुभव करने का सौभाग्य सैलानियों को प्राप्त हो सकेगा। ग्रामीण विरासत स्थलों में अनुवादक, गाइड, रेस्तरां, होटल जैसे सुविधा प्रदान करने से पर्यटकों को संपूर्ण आनंद का अनुभव हो सकेगा।
- सरकारी-निजी क्षेत्रों की भागीदारी के साथ, मूर्त तथा अमूर्त संसाधनों व स्थलों/संस्कृति का संरक्षण व विकास कर पर्यटन की स्थलों को बढ़ाया जा सकता है। लोक कलाओं, नृत्य-स्वरूपों, थिएटर, गीत-संगीत, खान-पान, पारंपरिक परिधान, इन सभी विषयों में भारत का ग्रामीण क्षेत्र विशिष्टता रखता है, जो पर्यटकों को लुभाने के लिए पर्याप्त है।

- ग्रामीण पर्यटन का सतत् विकास भारत की समृद्धि व विकास के अति महत्वपूर्ण है। अपनी ग्रामीण-संस्कृति व अन्य सांस्कृतिक विरासत को पर्यटन केन्द्र बनाने के साथ-साथ कृषि पर्यटन, जैविक खेती, योग व ध्यान केन्द्र, बाग-बगीचे, ग्रामीण खेल, जनजातीय संस्कृति, वन-जीव रिजर्व व अभयारण्य, झील, आर्द्रभूमि जैसे स्थलों का विकास कर ग्रामीण पर्यटन का विकास किया जाना चाहिए जो भारत की अर्थव्यवस्था को विकसित करने में सहायक होगी।

8. कृषि पर्यटन में असीम संभावनाएँ

कृषि पर्यटन

- कृषि पर्यटन, पर्यटन उद्योग की नवीन अवधारणा है, जो खेतों से शुरू होती है तथा पर्यटकों द्वारा ग्रामीण जीवन के विभिन्न स्वरूपों का आनंद लिए जाने में निहित होती है। पर्यटकों द्वारा ग्रामीण व प्राकृतिक सौम्यता का आनंद लिए जाने के साथ ही कृषि कार्यों व पद्यतियों का ज्ञान-अर्जन एवं अवलोकन भी किया जाता है।

कृषि पर्यटन का महत्व

- कृषि प्रधान-देश होने के नाते भारत में कृषि पर्यटन की असीम संभावनाएँ निहित हैं।

- कृषि पर्यटन उत्तम दर्जे की उत्पाद एवं इससे संबंधित जानकारियाँ उपलब्ध कराती है।
- यात्रा एवं पर्यटन के मामले में विश्व के 184 देशों में भारत का 14वाँ स्थान
- यात्रा एवं पर्यटन के संलग्न क्षेत्रों से भारत में कुल रोजगार का 9% रोजगार उपलब्ध होता है।
- कृषि पर्यटन क्षेत्र में रोजगार सृजन की असीम क्षमताएं
- नए पीढ़ियों द्वारा कृषि पर्यटन द्वारा खेती के नवीन तकनीकों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, साथ ही इससे किसानों के परिश्रम व अन्न की महत्ता समझ में आयेगी जिससे खाद्यान्नों की बर्बादी में कमी लाने के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।
- अस्त-व्यस्त व तनावपूर्ण शहरी जीवन से कृषि पर्यटन शांति का आभास कराती है।
- वर्तमान पीढ़ी के बच्चे इंटरनेट, वीडियो गेम, टीवी की दुनिया में व्यस्त हैं, ऐसे में कृषि पर्यटन उन्हें जीवन के रंगीन व खुशनुमा पहलुओं से अवगत कराएगा।
- कृषि पर्यटन के द्वारा कृषि, ग्रामीण, जंगल, पशुओं से संबंधित ज्ञान का अर्जन प्रायोगिक तौर पर किया जा सकेगा।
- अध्ययन के अनुसार, कई सारे बच्चों ने दूध देने वाली गाय व भैसों को कभी नहीं देखा है, ऐसे में कृषि पर्यटन उनका ज्ञान वर्धन करेगी।

- 25% शहरी लोगों का ग्रामीण परिवेश से कोई संबंध नहीं है, साथ ही 34% शहरी बच्चे

कभी गांव नहीं गए हैं, ऐसे मे कृषि पर्यटन न केवल बच्चों को ग्रामीण परिवेश की कोमलता से रूबरू करवाएगी, बल्कि ग्रामीण व शहरी लोगों के बीच मध्यस्थता को बढ़ाकर प्रेम बढ़ाने का कार्य भी करेगी।

कृषि पर्यटन की विशिष्टता

- कृषि पर्यटन की विशिष्टता इसके शांताप्रिय, रमणीय, तथा प्राकृतिक पर्यावरण व ग्रामीण परिवेश व क्रिया-कलापों में निहित है।
- विभिन्न फसलों को खेतों में लगा देखना
- फसलों के उत्पादन की प्रक्रिया को प्रायोगिक रूप में देखना
- फसलों को स्वयं से काटने का अनुभव प्राप्त करना
- बच्चों को भेड़, बकरी, बत्तख, मुर्गे-मुर्गियों आदि के साथ खेलने का अवसर
- बैलगाड़ी, ऊंट गाड़ी, घोड़ागाड़ी आदि का लुत्फ
- बाग-बगीचे में स्वयं से ताजे फल तोड़कर खाना
- गाय-भैंस आदि का दूध निकालने का अनुभव
- गाँव के विशिष्टतापूर्ण घरों में निवास, स्वादिष्ट तथा स्वास्थ्य-वर्धक भोजन का आनंद
- ग्रामीण संस्कृति, लोक-कला, भाषा आदि का ज्ञान

कृषि पर्यटन :- एक संभावना

एक सस्ता प्रवेश द्वार-

- कृषि पर्यटन अन्य पर्यटन के तुलना में सस्ता तथा ज्यादा आनंद देने वाला है। भोजन, आवास व यात्रा की लागत बेहद कम होती है। पर्यटन के क्षेत्र-विस्तार विस्तृत होने से विशेष गंतव्य स्थल ढूँढने की जरूरत भी नहीं होती।

खेती उद्योग व ग्रामीण जीवनशैली का ज्ञानः-

- शहरी आबादी को हमेशा ग्राम्य-जीवन, खान-पान, रहन-सहन, भाषा-संस्कृति, कृषि के तरीके, पशुपालन आदि के बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है, ऐसे में कृषि पर्यटन इन सबका समाधान कर सकता है।

सभी वर्ग के लिए मनोरंजक गतिविधियाँः-

- कृषि पर्यटन के सबसे बड़ी विशिष्टता यही है कि इसमें विभिन्न आयु वर्गों, जैसे बच्चे-जवान, बूढ़े, महिलाएँ सभी के लिए मनोरंजक गतिविधियाँ उपलब्ध है। साथ ही ये क्रियाकलाप पूर्णरूपेन सुरक्षित भी है।
- स्वास्थ्य, चेतना, प्राकृतिक वातावरणीय अनुकूल विकल्पों को कृषि-पर्यटन एक साथ पूरा करने में सक्षम है। कृषि पर्यटन के जरिए आयुर्वेद से संबंधित ज्ञान भी पर्यटकों द्वारा अर्जित किया जा सकता है।
- वर्तमान भीड़-भाड़ व मानसिक विचलन पैदा कर देने वाली शहरी जीवन में, कृषि पर्यटन शांति व नवस्फूर्ति का संचार करने में सक्षम है।
- कृषि पर्यटन के माध्यम से प्रकृति प्रेम की दिशा में जागरूकता बढ़ाया जा सकता है। वास्तव में जब मानव द्वारा पेड़-पौधो, वन्य जीव आदि के बीच समय बिताया जाता है, तो उन्हें स्वयं ही प्रकृति प्रेम की भावना का भान हो जाता है।

- कृषि पर्यटन, कृषि, प्रकृति, पशुओं अन्य मवेशियों के बारे में छोटी से लेकर बड़ी जानकारियों का पर्यटकों में हस्तांतरित करने में सहायक है। उच्चतर शिक्षा स्तर पर कृषि यांत्रिकी, कृषि-जैवविविधता व अन्य कृषि विषयक जैसे विषय उपलब्ध हैं, जिसका प्रायोगिक ज्ञान कृषि पर्यटन के माध्यम से लिया जा सकता है। साथ ही पशु-चिकित्सक जैसी क्षेत्र में भविष्य बनाने वाले युवाओं के लिए भी कृषि पर्यटन के माध्यमों से पशुओं के व्यवहार, खान-पान व उनमें होने वाली बीमारियों व उनके संभावित इलाज का अध्ययन प्राकृतिक रूप में किया जा सकता है।

कृषि पर्यटन के उद्देश्य/लाभः-

- कृषि संलग्न क्षेत्रों का विकास, कृषकों की आय में वृद्धि
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा
- स्थानीय लोगों की आजीविका-रोजगार में वृद्धि

- स्थानीय क्षेत्रों का अवसंरचनात्मक विकास संभव
- स्थानीय/कृषि उत्पादों की लोकप्रियता का प्रसार
- प्रकृति-संरक्षण के दिशा में जागरूकता में वृद्धि
- शहरी पीढ़ियों का ग्रामीण-व्यवस्था से जुड़ाव
- स्थानीय छात्र व शहरी छात्र के बीच ज्ञान का समन्वय
- ग्रामीण कला-संस्कृति आदि की ब्रांडिंग
- खाद्यान्न के बर्बादी में कमी संभव
- कृषि, ग्रामीण की अर्थव्यवस्था में विकास के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास
- अध्ययन बताते हैं कि भारत में किसान लगातार खेती छोड़ते जा रहे हैं, जिसका कारण आय में कमी तथा आय की अनिश्चितता, उत्पादों के लिए बाजार, सड़क आदि की कमी है। ऐसे में कृषि पर्यटन न सिर्फ किसानों की आय बढ़ाएगा बल्कि नए रोजगार के विकल्प जैसे- गाइड उपलब्ध करवाएगा, बल्कि किसानों का विदेशी अथवा शहरी पर्यटकों से मेल-मिलाव नए तरह की रोमांच दिलाएगा, जिससे कृषकों की खेती की तरफ दिलचस्पी बढ़ेगी।
- इसके अलावा कृषि-पर्यटन से बाढ़, सूखा आदि प्राकृतिक कारणों से बर्बाद हुई फसल तथा आर्थिक क्षति की भरपाई की जा सकती है।

कृषि पर्यटन को बढ़ाने के सुझाव/रणनीति

- किसानों के बीच कृषि पर्यटन से संबंधित ज्ञान का प्रसार, पर्यटकों से संपर्क स्थापित करने की प्रक्रिया का प्रशिक्षण
- कृषक अथवा कृषि-संलग्न लोगों का कौशल विकास
- उत्पादन-प्रक्रिया, फसलों का भंडारण आदि से संबंधित विवरणी का प्रदर्शन
- पर्यटकों को क्षेत्रीय, कृषीय संबंधी व्यापक ज्ञान से अवगत कराने के लिए कुशल गाइड

कृषिगत उत्पाद के साथ ही अन्य स्थानीय उत्पादों की ब्रांडिंग, विज्ञापन या अन्य माध्यमों से प्रसार-प्रचार

- शहरीकृत होटल, रेस्तरां के बजाय ग्रामीण घरों में सुरक्षित होमस्टे की सुविधा की उपलब्धता
- पर्यटन को आकर्षित करने के लिए विशेष दिवस पर कृषिगत सामग्रियों का प्रदर्शनी
- बच्चों के लिए पिकनिक हाट-स्पाट की व्यवस्था
- टूर-ऑपरेटर, ट्रेवल-एजेंट तथा अन्य पर्यटक एजेंसियों के साथ संपर्क स्थापित कर कृषि पर्यटन के लिए न्योता/आमंत्रण
- सस्ते कीमत पर विशेष पैकेज जैसे स्कीम की व्यवस्था से भी पर्यटक को लुभाया जा सकता है।
- सूचना प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का व्यापक इस्तेमाल कर, पर्यटन स्थल संबंधी समग्र जानकारी उपलब्ध करवाकर पर्यटकों को कृषि पर्यटन से जोड़ा जा सकता है।
- पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना प्राथमिकता में होनी चाहिए क्योंकि कृषि पर्यटन सामान्यत: निवास स्थलों से दूर ही होते है, ऐसे में आपातकालीन सुरक्षा-व्यवस्था होनी चाहिए, चाहे वह स्वास्थ्य, चोरी, जंगली जानवरों से संबंधित खतरा हो या किसी प्राकृतिक आपदा जैसे भारी बारिश, भूस्खलन आदि।

- संचार एवं परिवहन व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण
- कृषि-पर्यटन स्थलों का चुनाव तथा इसे राज्य पर्यटन निगम अथवा अन्य कृषि पर्यटन यूनिट के साथ साझा करना
- स्थानीय बाजार का विकास, स्थानीय स्तर पर टैक्सी, ऑटो जैसे परिवहन की सुविधा, इंटरनेट तक संपूर्ण व बिना व्यवधान की पहुँच।
- कृषि व्यवसायी, किसान संगठन, सहकारी समितियाँ, एनजीओ, एग्री-बिजनेस कंपनियां आदि के साथ राज्य अथवा स्थानीय सरकारी एजेंसियों के प्रयास से कृषि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- कृषि पर्यटन को ध्यान-केन्द्र, योग-केन्द्र अथवा स्वास्थ्य-पर्यटन के रूप में प्रचार-प्रसार कर पर्यटन को बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष

- भारत में प्राकृतिक परिस्थितियों और विभिन्न प्रकार के कृषि-जलवायु के कारण कृषि-उत्पादों में विविधता तथा ग्रामीण पारंपरिक त्योहार, परिधान, लोक-कला जैसे नृत्य, संगीत, शिल्प-कला, हस्तकलाकी परिपूर्णता, कृषि व ग्रामीण पर्यटन की असीम संभावना को प्रदर्शित करते हैं।

- शहरी जीवन की अस्त-व्यस्तता ने कृषि पर्यटन जैसे विकल्प के महत्व को बढ़ा दिया है क्योंकि कृषि पर्यटन न केवल मनोरंजन का साधन होता है, बल्कि अपनापन, भावनात्मक प्रेम, शिक्षा तथा ज्ञान का प्रचारक भी होता है।
- स्थानीय जिला व राज्य स्तर पर कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के विकल्पों पर कार्य किया जाना चाहिए तथा कृषि पर्यटन को बढ़ाने के लिए नवीन विचारों का आदान-प्रदान करना चाहिए।
- सरकार को अनुदान एवं संस्थागत वित्त प्रदान कर कृषि पर्यटन के विकास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए तथा संपूर्ण भारत के कृषि पर्यटन स्थल को एक विशेष नेटवर्क से जोड़कर एकीकृत विकास प्रणाली स्थापित कर, इसके द्रुत-विकास के लिए प्रयास करना चाहिए, क्योंकि कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, ऐसे में कृषि व कृषि पर्यटन का विकास भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करेगा।

9. ग्रामीण पर्यटन- प्रगति और संभावनाएं

पर्यटन

- पर्यटन वह गतिविधि है, जिसमें लोग व्यक्तिगत अथवा समूह के रूप में विभाजित दिनचर्या से अलग, मनोरंजन, विश्राम अथवा मनशांति के लिए, किसी अन्य क्षेत्र चाहे वह आंतरिक हो या वाह्य का भ्रमण करते हैं।
- हालांकि बदलते दौर के साथ पर्यटन का स्वरूप भी बदला है, अब इसमें साहसिक खेलों तथा आध्यात्मिक पर्यटन, खाद्य, स्वास्थ्य एवं कृषि पर्यटन जैसे क्षेत्र भी शामिल हैं।

पर्यटन व अर्थव्यवस्था

- भारत सहित विश्व अर्थव्यवस्था के सेवा क्षेत्र में अहम योगदान।
- वर्ष 2019 में यात्रा व पर्यटन से भारत को 194.30 अरब **USD** की आय, जो जीडीपी का 6.8% तथा 2028 तक इसकी मात्रा 512 अरब **USD** होने की संभावना

- 2010 में सिर्फ पर्यटन से 14.5 अरब **USD** की विदेशी मुद्रा आय
- 2028 तक 50.9 अरब होने की संभावना
- 2019 में भारत, वैश्विक स्तर पर पर्यटन से विदेशी आय प्राप्त करने में 13 वें स्थान पर था।
- वैश्विक स्तर पर पर्यटन से आय में भारत का हिस्सा 2.05%
- निवेश के सबसे सस्ते विकल्पों द्वारा नए रोजगार सृजन की क्षमता
- वर्ष 2020 तक लगभग 4 करोड़ लोग इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से रोजगार में संलग्न जो 2029 तक बढ़कर 5.3 करोड़ होने की संभावना
- 2020-21 के दौरान होटल एवं पर्यटन क्षेत्र में 15.9 अरब यूएसडी का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

ग्रामीण पर्यटन

- पर्यटन का वह रूप जो ग्रामीण क्षेत्रों में संपन्न होता है, जिसमें पर्यटकों द्वारा ग्रामीण कला, संस्कृति,

धरोहर, परंपरा, रीति-रिवाज आदि का लुत्फ उठ. ाया जाता है, साथ ही ग्रामीण/स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ की प्राप्ति होती है, ग्रामीण पर्यटन कहलाता है।

- ग्रामीण पर्यटन बहुआयामी प्रकृति का होता है, जिसमें प्रकृति पर्यटन, कृषि पर्यटन, जनजातीय पर्यटन, साहसिक पर्यटन के साथ-साथ पारिस्थितिकी पर्यटन भी समाहित होता है।

- भारतीय संस्कृति का वास ही गांवों में होता है। अपने समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सँवारे, भारतीय गांव वैश्विक पटल पर पर्यटन भव्यता के लिए प्रसिद्ध है।
- गुजरात के कच्छ क्षेत्र के गांव, शिल्प व साल्ट डेजर्ट के कारण 'कच्छ एडवेंचर्स इंडिया' के रूप में प्रसिद्ध है।
- पंजाब के ग्रामीण क्षेत्र, खेती की आकर्षक गतिविधियों के कारण 'इत्मिनान लाजेज पंजाबियत' के रूप में प्रसिद्ध है।
- संथाल जनजातीय संस्कृति के लिए बल्लभपुर डाँगा (पश्चिम बंगाल) प्रसिद्ध है।
- रेशमी साड़ियों की उत्कृष्ट कला के लिए पोचमपल्ली गांव प्रसिद्ध है।
- माजूली द्वीप, विशिष्ट नदी द्वीप गांव

- बर्फ से ढंके उत्तराखण्ड, हिमाचल, कश्मीर, सिक्किम के अलावा, जंगलों के लिए पूर्वोत्तर भारत के राज्य प्रसिद्ध हैं।
- केरल राज्य का कुमार कोम तथा 'शाम-ए-शिविर' के रूप में गुजरात का होड़का गाँव वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय है।

भारत में 6.5 लाख से ज्यादा गांवों हैं तथा प्रत्येक गांव के पास अपनी एक विशिष्टता है, जो पर्यटकों को लुभाने से सक्षम है। वास्तव में ऐसे किसी क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए 6A जिसमें आकर्षण (**Atrection**), सुविधाएं (**Amenities**), पहुँच (**Accesbility**), उपलब्ध पैकेज (**Available Packeg**), गतिविधियाँ (**Activities**) व सहायक सेवाएं (**Assistence Service**) आवश्यक कदम हो सकते हैं।

ग्रामीण पर्यटन- सरकारी प्रोत्साहन और प्रयास

- सर्वप्रथम 2002 में राष्ट्रीय पर्यटन विकास नीति के तहत ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2002-03 में पर्यटन मंत्रालय द्वारा इससे संबंधित पहल प्रारम्भ की गई, जिसमें धार्मिक, पारिस्थितिकी, विकास पर्यटन को भी बढ़ावा दिया गया।
- वर्ष 2004 में **UNDP** की सहायता से पर्यटन मंत्रालय ने 'इंडोजेनस पर्यटन परियोजना' असम के सुआलकुची गांव से शुरू की गई जो ग्रामीण पर्यटन परियोजना का ही भाग था। असम के सुआलकुची गांव से शुरू की गई सुआलकुची रेशम की बुनाई के लिए प्रसिद्ध है, जिसके कारण इसे 'पूर्व का

- इस योजना ने पर्यटन को भारत में सतत् ग्रामीण विकास के रूप में कार्य करने पर बल दिया, जिससे स्थायी ग्रामीण रोजगार, आजीविका के नए साधन तथा लैंगिक समानता को बढ़ाने में मदद मिली।
- 'अतुल्य भारत अभियान' की शुरूआत 2002 में पर्यटन मंत्रालय द्वारा की गई, जिसका प्रमुख उद्देश्य, भारतीय पर्यटन स्थल को वैश्विक स्तर पर प्रसिद्धि दिलवाना है। 2003 में 'अतिथि देवो भव:' के आदर्श वाक्य के साथ इस योजना ने अतिथि का महत्व तथा भारत में अतिथियों के स्वागत व व्यवहार संबंधी जागरूकता प्रसारित करने का काम किया।
- 'अतुल्य भारत' के नवीन स्वरूप को वर्ष 2017 में 'अतुल्य भारत 2.0' के तहत 'एडॉप्ट-ए-हेरिटज' प्रोजेक्ट को लाँच किया गया, जो पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय तथा भारतीय पुरातत्व विभाग का संयुक्त पहल है।

- 'भारत को जानें' कार्यक्रम विदेश मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014 में लाँच किया गया, जिसका उद्देश्य विदेशी भारतीयों को भारतीय जीवन के विविध पहलुओं का ज्ञान उपलब्ध कराना था।
- साथ ही इस योजना का उद्देश्य, भारतीय मूल के युवाओं को भारत के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की गई उपलब्धियों के बारे में जानकारी देना तथा भारत भ्रमण कर अपने अनुभवों को साझा करने के लिए विशिष्ट मंच उपलब्ध कराना है।
- विदेश में भारतीय मिशनों के सिफारिश पर इस योजना के अंतर्गत 18-26 उम्र के विदेशी युवा को शामिल किया गया।

- 'स्वदेश दर्शन योजना', विषयगत पर्यटन परिपथ के एकीकृत विकास हेतु पर्यटन व संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त योजना है। इसे वर्ष 2014-15 में शुरू किया गया, जिसमें ग्रामीण पर्यटन को ध्यान में रखकर पूर्वोत्तर परिपथ, इको-पर्यटन परिपथ, वन्य-जीव परिपथ तथा ग्रामीण परिपथ शामिल है, साथ ही गांधी परिपथ के तहत भितिहरवा, चंदृहिया, तुरकौलिया, को पर्यटन स्थल के रूप में शामिल किया गया है।
- पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014-15 में 'प्रसाद योजना' प्रारंभ की गई जो मुख्यत: तीर्थ-स्थल कायाकल्प

और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान है। ग्रामीण क्षेत्रें में अवस्थित तीर्थ-स्थलों एवं धार्मिक जगहों का पुर्नरोद्धार कर इसे पर्यटन योग्य बनाना, इस योजना का एक उद्देश्य है। इस योजना के अंतर्गत पर्यटन-स्थलों से संबंधित क्षेत्रें में अवसंरचनात्मक विकास पर मुख्यत: ध्यान दिया जाता है। सरकार द्वारा वर्तमान तक 24 राज्यों में 39 परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई है।

पर्यटन मंत्रालय
MINISTRY OF TOURISM
सत्यमेव जयते

- ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा संचालित 'श्यामा प्रसाद मुखर्जी रूर्बन मिशन' शब्द, ग्रामीण क्षेत्रें में एकीक़्रत बुनियादी अवसंरचना के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 23 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में 84 पर्यटन अवसंरचनात्मक पयियोजनाएँ चलाई जा रही है, जिसमें टूरिज्म लॉज, पर्यटन स्थलों का सौंदर्यीकरण, व अन्य सुविधाओं का विकास भी शामिल है।
- 'आत्मनिर्भर भारत योजना 2020' के अंतर्गत स्थानीय उत्पादों की ब्रांडिंग की बात की गई है। ग्रामीण क्षेत्रें का विकास, भारतीय विकास के लिए काफी अहम है। चूकिं ग्रामीण पर्यटन नए रोजगार का सृजन, निश्चित व स्थायी आय का स्रोत, युवाओं-महिलाओं का सशक्तिकरण आदि में सक्षम है, ऐसे में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देकर 'आत्मनिर्भर भारत' के सुखद स्वप्न को पूरा किया जा सकता है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान

- भारत सरकार द्वारा वर्ष 2021 के जून में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय रणनीति का मसौदा भी तैयार किया, जो निम्न बिंदुओं पर केन्द्रित है:-
- आदर्श नीतियाँ व सर्वोत्तम क्रियान्वयन
- डिजीटल प्रौद्योगिकियों का व्यापक इस्तेमाल ग्रामीण पर्यटन समूहों का विकास
- पर्यटन से फायदेमंद समूह का क्षमता निर्माण वित्तीय संपोषण व शासन - संस्थागत ढाँचा का विकास

ग्रामीण पर्यटन के विकास की संभावनाएँ

- धार्मिक विविधता के कारण विभिन्न धर्मो से संबंधित अनेकों तीर्थ स्थल, धार्मिक स्थल
- नस्लीय, जातीय, भाषायी, कला, संस्कृति के विभिन्न प्रकार, विशिष्ट पर्यटन के साथ ज्ञान के स्त्रोत
- परंपरा, नृत्य, शिल्प, खान-पान, परिधान आकर्षण के केन्द्र
- शहरों के तनवापूर्ण जीवन की तुलना में शांत व सौम्य ग्रामीण जीवनशैली

कृषि, पारिस्थितिकी पर्यटन का केन्द्र

- भौगोलिक व जनवायविक रूप से विविध भारत के ग्रामीण क्षेत्र अनूठी विशिष्टता रखते हैं चाहे वे उत्तर के हिमालयी गांव हो या दक्षिण भारत के तटीय गांव, साथ ही पूर्वोत्तर राज्यों के घने जंगल, जनजातीय प्रथा वाले ग्रामीण क्षेत्र हों अथवा मरूस्थलीय-रंगीन परंपराओं को जीवित रखने वाले गांव।
- वन्य जीव अभयारण्य, टाईगर रिजर्व हाथी रिजर्व, बायो स्फीयर रिजर्व जैसे प्राकृतिक क्षेत्र जो मनमोहक जंगलों के साथ जानवरों को प्राकृतिक आवास में देखे जाने का आनंद देते हैं।
- भारतीय हिमालय क्षेत्र, उत्तराखंड, केरल, तमिलनाडु जैसे राज्यों के झीलों, पहाड़ियों, बैकवाटर में नौकादौड़, त्यौहार ये सभी ग्रामीण पर्यटन के विशिष्ट क्षेत्र हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का पर्यटन के प्रति भावनात्मक प्रेम, व्यवहार भी पर्यटन को विकसित करने में मदद करते हैं

- ग्रामीण खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चाय बागान, ध्यान व योग के केन्द्र, जैविक खेती, पशुओं का आवास, पशुपालन की खूबियाँ भी ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाने में कारगर है, जो पर्यटकों को खूब भाते हैं।

ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के उपाय या कमी को दूर करने के सुझाव

- पर्यटन स्थलों को चिन्हित कर विकास
- परिवहन, संचार संबंधी सुविधा
- सड़क, रेलवे, हवाई नेटवर्क का विस्तार
- डिजीटल प्रौद्योगिकी का व्यापक इस्तेमाल द्वारा पर्यटन स्थलों से संबंधित जानकारी को सोशल मीडिया साइट्स पर उपलब्धता, ब्रांडिंग विज्ञापन

- आपातकालीन सुविधा का विस्तार, हेल्पलाईन डेस्क स्वास्थ्य सुरक्षा संबंधी सेवाओं का विस्तार
- विभिन्न भाषा का ज्ञान रखने वाले गाइड की उपलब्धता
- आधुनिक होटल, होमस्टे, रेस्तरां की सुविधा
- टूर-ऑपरेटर, ट्रेवल-एजेंसियों के साथ विशेष समझौता द्वारा ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा

कृषि पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन के समग्र पर्यटन संबंधी विशेष पैकेज प्रोत्साहन योजना

- बच्चों के ज्ञान-वर्द्धन व मनोरंजन के लिए पिकनिक हॉट-स्पॉट का चयन
- पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच विश्वास प्रेम-भाव को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

आगे की राह

- देश की 70 प्रतिशत आबादी 6.64 लाख

गांवों में निवास करती है। विविधता को प्रदर्शित करने वाली एक कहावत 'कोस कोस पर पानी बदले, 4 कोस पर वाणी', भारतीय संस्कृति की मजबूती को बयां करती है। विशिष्टता भारत के प्रत्येक गांव में है, जरूरत बस उसे चिन्हित कर विश्व स्तरीय बनाने की है। इसी प्रयास में सहायता पर्यटन संगठन द्वारा 1991 में सिक्किम के एक गांव के 40 परिवारों को शामिल कर गांव आधारित पर्यटन की शुरूआत की गई जो काफी सफल भी रही । वर्तमान में ये योजना पूर्वोत्तर भारत के 22 स्थानों पर चलाया जा रहा है, जा काफी सफल हो रहा है।

- हाल के वर्षों में कृषि क्षेत्र का जीडीपी में हिस्सेदारी लगातार कम होते जा रहा है, ऐसे में ग्रामीण व कृषि पर्यटन न केवल कृषकों व खेती जगत के लिए फायदेमंद होगा, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए भी हितकारी होगा।

- वास्तव में ग्रामीण पर्यटन अवसरों की एक श्रृंखला के रूप मे कार्य करती है, जिसमें रोजगार का सृजन, स्थायी आजीविका के स्रोत तथा व्यापार के नए आयाम शामिल हैं। इसके अलावा ग्रामीण पर्यटन वास्तव में स्वास्थ्य, पोषणीय, ध्यान, योग, शांति-मनोरंजन, ज्ञान, कृषि, पारिस्थितिकी, साहसिक पर्यटन का समग्र रूप है, जिसका विकास वस्तुतः पूरे भारत का विकास होगा।
- निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण पर्यटन गांवों में संपन्नता व कुशलता को बढ़ाने के साथ ही पीएम मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के स्वप्नों को पूरा करने में सक्षम है।

हालांकि ऐसा स्वप्न पूरा करने के लिए ग्रामीण पर्यटन से संबंधित सभी बाधाओं को दूर करना नितांत जरूरी है।

- वास्तव में भारतीय संस्कृति ग्रामीण संस्कृति की वजह से ही विश्व भर में विशेष महत्व रखती है, ऐसे में ग्रामीण पर्यटन न केवल आर्थिक मोर्चे पर देश का कल्याण करेगी, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों को बेहतर बनाने की दिशा में भी अग्रणी भूमिका निभाएगी।

Notes

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.com/hindi

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744